इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
विस्तार एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ

BEDSV-101
मूल्यपरक शिक्षा

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

BEDSV-101

मूल्यपरक शिक्षा

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विस्तार एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

प्रो० एन० के० अंबष्ट
पूर्व चेयरमैन,
एनआईओएस

प्रो०सी० आर० के० मूर्थी
प्राध्यापक, स्ट्राइड, खंड-14, इग्नू

प्रो०सोमदत्त दीक्षित
निदेशक एवं कार्यकारी महासचिव
(WAVE),नई दिल्ली-24

श्रीमान जे० एन० शर्मा
शिक्षा परामर्शदाता
भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली

प्रो०बी० एस० डागर
पूर्व सलाहकार,
स्ट्राइड, इग्नू

सविथा कपूर
पूर्व प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय
प्रगति विहार, नई दिल्ली

डॉ०लता पांडे
सहायक प्राध्यापिका,
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी, नई दिल्ली

डॉ० इंदु कुमार
सहायक प्राध्यापक,
प्रारम्भिक शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री इंदु गोस्वामी
प्रिंसिपल, केन्द्रीय विद्यालय
रोहिणी, नई दिल्ली

डॉ० शेफ़ाली श्रीवास्तव
प्रचारक, मूल्य शिक्षा
भोपाल, एम० पी०

डॉ०सिलिमा नंदा
उप निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय प्रभाग,
खंड -14, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो०सुतपा बोस
प्राध्यापिका,
शिक्षा विद्यालय, इग्नू.

पाठ्यक्रम निर्माण दल

लेखक : खंड -1
प्रो०बी० एस० डागर
(इकाई1-4)

लेखक : खंड -2
सुश्री बिशाखा सेन (इकाई1-3)
प्रो० सुतपा बोस (इकाई4)

लेखक : खंड -3
प्रो०बी० एस० डागर
(इकाई1-4)

लेखक : खंड -4
डॉ० शेफ़ाली श्रीवास्तव
(इकाई 1-4)

लेखक : खंड -4
डॉ० वंदना सिंह (इकाई-1)
सुश्री० इंदु गोस्वामी (इकाई-2)
श्री० जे० एन० शर्मा (इकाई-3)
डॉ० जयश्री मेनन (इकाई-4)

संपादक

प्रो० सुतपा बोस, इग्नू
प्रो० पी० के० बिस्वास

अनुवादक

डॉ० क़ुदसिया नसीर
सहायक प्राध्यापिका
सीडीओई, जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली

भाषा संपादक

प्रो०सुनैना कुमार, एसओएच , इग्नू
डॉ०सिलिमा नंदा
उप निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय प्रभाग, खंड -
14, इग्नू, नई दिल्ली

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ० ग्रैस डॉन नेमचिंग, इग्नू
प्रो० बी० के० पटनाइक, इग्नू

प्रिंट उत्पादन

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव
एमपीडीडी, इग्नू, नई दिल्ली

मई, 2024

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2024

ISBN: 978-93-6106-041-0

सभी अधिकार सुरक्षित. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति के बिना, इस कार्य के किसी भी भाग को किसी भी रूप में, मिमोग्राफ या किसी अन्य माध्यम से पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय केपाठ्यक्रमों के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय केकार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की ओर से कुलसचिव, एमपीडीडी, इग्नू द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाइपसेटिंग: टेसा मीडिया एंड कंप्यूटर, सी -206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

मुद्रक : नूतन प्रिंटर्स, एफ–89/12, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
विस्तार एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ

BEDSV-101
मूल्यपरक शिक्षा

खंड 1	
वैचारिक ढांचा	**5**
खंड 2	
बदलती संस्कृति एवं मानवीय मूल्य	**57**
खंड 3	
सैद्धांतिक संस्थापना	**121**
खंड 4	
सामाजिक गतिशीलता और मूल्य विकास	**171**
खंड 5	
सामाजिक संबंध	**237**

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

मूल्यपरक शिक्षा का परिचय

प्रिय विद्यार्थियों! इस पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है|

यह मूल्य शिक्षा पर परिचयात्मक पाठ्यक्रम है और इसकी रचना उसी के अनुसार की गई है। यह पाठ्यक्रम 5 खंडों में प्रस्तुत किया गया है, जिनमें से प्रत्येक खंडका विशिष्ट उद्देश्य है।वर्तमान आधुनिक समाज का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भ्रष्टाचार, घृणा, आतंकवाद, हिंसा आदि जैसी कई सामाजिक विकृतियों से पीड़ित है एवं इसके लिए मूल्य-आधारित शिक्षा अति आवश्यक है। ऐसी मूल्योन्मुख शिक्षा समाज में नकारात्मक प्रभावों से निपटने में सहायता कर सकती है। ऐसे परिदृश्य में, शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे व्यक्तियों के संज्ञानात्मक, शारीरिक, भावनात्मक एवं नैतिक समग्र विकास के माध्यम से समाज के पुनर्निर्माण में सहायता कर सकते हैं। इनमें ऐसी शिक्षण विधियों की आवश्यकता है जो मूल्यांकन संबंधी मुद्दों के बारे में तर्कसंगत, उदार और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा दें। शिक्षण सामग्री में तर्क के सिद्धांतों और अच्छे तर्क के नियमों का परिचय दिया जाना चाहिए जिन्हें नैतिक शिक्षा के व्यावहारिक मुद्दों से निपटने में लागू किया जाना चाहिए।

नैतिक व्यवहार के विकास की तुलना में नैतिकता के महत्व को गहराई से महसूस किया गया है। पियागेट, कोहलबर्ग, गिलिगन और उनके सहयोगियों द्वारा प्रतिपादित तर्क एवं निर्णय के नैतिक सिद्धांतों द्वारा प्रतिबिंबित नैतिकता के विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की गई है। मूल्य सिद्धांतों में यह समझने के लिए दृष्टिकोणों की श्रृंखला शामिल है कि मनुष्य को कैसे, क्यों और किस सीमा तक चीजों को महत्व देना चाहिए, चाहे वह चीज एक व्यक्ति, विचार, वस्तु या कुछ और हो। प्रारंभिक दार्शनिक जांच में अच्छाई और बुराई और "अच्छे" की अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया। आज अधिकांश मूल्य सिद्धांत वैज्ञानिक रूप से अनुभवजन्य है, जो यह दर्ज करता है कि लोग क्या महत्व देते हैं और यह समझने का प्रयास करते हैं कि समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के संदर्भ में वे इसे क्यों महत्व देते हैं। बुनियादी मूल्यों के आधार पर जीवन जीना जीवन को खुशहाल एवं सफ़ल बनाता है। देखभाल के साथ-साथ देना भी जीने के दो बुनियादी मानवीय मूल्य हैं। वे समस्त मानव जीवन में गुणवत्ता जोड़ते हैं।

मूल्य हमारे विचार एवं व्यवहार को निर्देशित करने वाले सिद्धांत हैं। वे न केवल यह निर्धारित करते हैं कि हम क्या करते हैं, बल्कि यह भी निर्धारित करते हैं कि हम कौन हैं। व्यक्तियों या संस्कृतियों की पहचान बहुत हद तक उनके द्वारा स्वीकार किए जाने वाले मूल्यों के समूह से परिभाषित होती है। यह संस्कृतियों के लिए विशेष रूप से सत्य है क्योंकि प्रत्येक संस्कृति में व्यवहारों का एक समूह होना चाहिए जिसे वह स्वीकार्य मानती है एवं दूसरा जिसे वह वर्जित मानती है। इस प्रकार विविध दृष्टिकोण और परंपराओं की उपस्थिति एकजुटता तथा आपसी समझ को बढ़ावा देती है, जो समाज को संकीर्ण सोच और असहिष्णु बनने से रोकने में सहायता करती है। बहुसंस्कृतिवाद समाज को प्रत्येक की संस्कृति का सम्मान करने, समझने और सहन करने का विशेषाधिकार देता है। बहुसांस्कृतिक विविधता का अर्थ है सभी समूहों एवं समुदायों के व्यक्तियों को शामिल करने एवं समर्थन करने की प्रतिबद्धता।

शांति एवं सद्भाव में रहने का प्रश्न सभी जागरूक मानवीय गतिविधियों का लक्ष्य होना चाहिए और इसी संदर्भ में लोकतंत्र की भावना पर प्रकाश डाला गया है। लोकतंत्र एक मूल्य आधारित अवधारणा है जो मनुष्यों की समानता, व्यक्तित्व के प्रति सम्मान, अधिकारों एवं कर्तव्यों तथा समाज में व्यक्तियों की समावेशी भागीदारी जैसी अवधारणाओं की प्रशंसा करती है। यह मानव कल्याण के सिद्धांतों पर आधारित सामाजिक जीवन की एक प्रक्रिया है। यह किसी के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का आश्वासन देता है और इस प्रकार शांतिपूर्ण तथा मूल्य आधारित जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।

खंड

1

वैचारिक ढाँचा

इकाई 1
सामाजिक विकृतियां एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता 9

इकाई 2
नैतिकता एवं नैतिक शिक्षा की अवधारणा 21

इकाई 3
नैतिकता के आयाम 34

इकाई 4
लोकतंत्र के स्तम्भ: शांति और सद्भाव से रहना 45

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 1 परिचय

इस खंड 1 में चार इकाइयाँ हैं।

इकाई 1 सामाजिक कृतियां एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता: वर्तमान भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित करती है। सामाजिक विकृतियाँ विविध प्रकृति की हैं जैसे बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, हिंसा, आतंकवाद, भाई-भतीजावाद, सामाजिक अपराध आदि। एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता जो समाज में ऐसे अवांछनीय प्रभावों को रोक सके और उनका मुकाबला कर सके, मूल्योन्मुख शिक्षा की आवश्यकता के लिए तत्काल औचित्य है। वर्तमान परिस्थितियों में बच्चों को सामाजिक रूप से सार्थक इंसान बनाने के लिए यह आवश्यक समाधान है।

इकाई 2 नैतिकता और नैतिक शिक्षा की अवधारणा: यह इकाई नैतिकता के साथ-साथ नैतिक शिक्षा की अवधारणा को भी स्पष्ट करती है। नैतिक व्यवहार के "रूप" एवं "सामग्री" के बीच अंतर को समझाते हुए नैतिकता की प्रकृति को स्पष्ट किया गया है। हेगेल द्वारा प्रतिपादित तर्कसंगतता के विभिन्न मानदंडों को भी चित्रित किया गया है। इकाई प्रत्येक मामले में उपयुक्त उदाहरण देकर नैतिक संस्थानों, नैतिक प्रशिक्षण और नैतिक शिक्षा के बीच अंतर पर भी चर्चा करती है।

इकाई 3 नैतिकता के आयाम: नैतिकता के बहुआयामी पहलू का वर्णन करता है। किसी भी अन्य व्यवहार की तरह, नैतिक व्यवहार भी व्यक्तित्व के कुछ क्षेत्रों से संबंधित है - विशेष रूप से संज्ञानात्मक और प्रभावी। यह इकाई इस बात को उचित ठहराती है कि कुछ प्रकार के व्यवहारों में आदत निर्माण का प्रशिक्षण, विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में, क्यों आवश्यक है। नैतिक निर्णय की गुणवत्ता जिसमें नैतिक कार्रवाई शामिल है, पर भी चर्चा की गई है।

इकाई 4 लोकतंत्र के स्तम्भ: शांति एवं सद्भाव से रहना: यह इकाई उन अवधारणाओं से संबंधित है जिन्हें लोकतंत्र के स्तंभ कहा जा सकता है: स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जो हमें शांति, सद्भाव और व्यक्तिगत सामाजिक विकास प्राप्त करने में सहायक हैं। लोकतांत्रिक जीवन एक-दूसरे के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में रहना सुनिश्चित करता है। शायद समानता एवं स्वतंत्रता में इस असीमित विश्वास के कारण ही भारतीय संविधान के निर्माताओं ने प्रस्तावना में प्रावधान किया कि जाति तथा पंथ, रंग, लिंग या क्षेत्र या धर्म के बावजूद सभी पुरुषों को क़ानून की नजर में समान माना जाएगा। यह शैक्षिक प्रक्रिया में लोकतंत्र के सिद्धांतों पर भी चर्चा करता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 सामाजिक विकृतियाँ एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 भारतीय समाज की विकृतियाँ

1.4 शिक्षा एवं मूल्यपरक शिक्षा का संबंध

1.5 मूल्योन्मुख शिक्षा की आवश्यकता

1.5.1 शिक्षकों की भूमिका

1.6 गतिविधियां

1.7 सारांश

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.9 सन्दर्भ

1.1 प्रस्तावना

कुछ विचारकों द्वारा एक बच्चे की तुलना एक ऐसे बीज से की गई हैजिसमें एक पूर्ण विकसित वृक्ष बनने की क्षमता होती है,बशर्ते इसकी वृद्धि के लिए आवश्यक वातावरण उपलब्ध कराया जाए। बच्चे को पर्यावरण केवल शिक्षकों या स्कूल द्वारा नहीं किया जाता है बल्कि कुल सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिवेश के द्वारा प्रदान किया जाता है जिसमें वह रहता है। ना ही केवल स्कूल के योजनाबद्ध प्रयास ही बच्चे को एक सार्थक व्यक्ति या व्यक्ति के रूप में विकसित करने में मदद करते हैं।घर एवं समाज भी शिक्षा के स्रोत हैं तथा ये बच्चों को नैतिक या अनैतिक बनने के लिए बहुत प्रभावपूर्ण होते हैं।ऐसा इसलिए है क्योंकि बच्चे बिना अभिप्राय बहुत हद तक (अच्छी और बुरी दोनों बातें) सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से सीखते हैं।वे घर, स्कूल, साथियों एवं अन्य सामाजिक स्रोतों से व्यवहार सीखते हैं।यह सीखने वाले या सिखाने वाले सामाजिक स्रोतों के किसी जाने बूझे एवं सचेत प्रयास के बिना भी हो सकता है।तो व्यक्तियों का विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश पर निर्भर करता है। विशेष रूप से यह छोटे बच्चों के लिए सत्य है क्योंकि उनका मस्तिष्क सरलता से प्रभावित होता है।

कोलिन्स इंग्लिश डिक्शनरी-पूर्ण एवं संक्षिप्त (2003) के अनुसार Malise फ्रांसीसी शब्द mal+aise से बना है mal जिसका अर्थ है बुरा aise का अर्थ है सहजता।इसे विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है: बेचैनी या अवसाद की भावना(मेडिसिन/पैथोलॉजी) एक हल्का रोग जिसमें किसी भी रोग या पीड़ा का लक्षण नहीं हैकिसी देश, अर्थव्यवस्था आदि को प्रभावित करने वाली समस्याओं का एक समूह। बुल्गारिया की आर्थिक अस्वस्थता। सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ में देखें तो आधुनिक समाज में अनेक बीमारियाँ व्याप्त हैं। अतः बच्चों के लिए सही प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है।शिक्षा की अवधारणा का मानव

विशिष्ट के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं-सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, नैतिक, आर्थिक एवं बौद्धिकविकास से गहरा संबंध है।एक तरह से शिक्षा, अपने सच्चे और पूर्ण अर्थ में, व्यक्ति के समग्र विकास का लक्ष्य रखती है:जो एक सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक प्राणी के रूप में स्वयं एवं दूसरों के लाभ के लिए भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ सार्थक तरीके से बातचीत कर सकता है।ऐसी शिक्षा जिसमें मूल्यपरक शिक्षा एक अभिन्न अंग हो, ऐसे नागरिकों को विकसित करने के लिए आवश्यक है जो सामाजिक बुराइयों को दूर कर सकें।

यह इकाई वर्तमान भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित करने का एक प्रयास है-सामाजिक कुरीतियाँ जो बच्चों के कोमल मन को प्रभावित करती हैं इसके लिए एक प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है जो इन विकृतियों के अवांछनीय प्रभावों का विरोध एवं मुकाबला कर सके और जिसके बारे में प्राथमिक शिक्षक को पता होना चाहिए।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप:

- आज के भारतीय समाज में व्याप्त प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक अस्वस्थता का वर्णन कर सकेंगे;
- स्पष्ट कर सकेंगे कि शिक्षित होने के लिए केवल ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है;
- हमारे समाज में मानवीय मूल्यों के क्षरण के प्रमुख कारणों का वर्णन कर सकेंगे; और
- हमें जिन परिस्थितियों में जीना होता है उसमें मूल्योन्मुख शिक्षा की आवश्यकता को उचित ठहरा सकेंगे

1.3 भारतीय समाज की विकृतियाँ

इस भाग में हम भारतीय समाज को प्रभावित करने वाली कुछ विकृतियों पर चर्चा करेंगे। हम मानवता की क़ीमत पर भौतिक धन, शक्ति एवं पद संचय करने के लिए पागलों की तरह भाग रहे है।यद्यपि हमें अपनी प्राचीन संस्कृति पर बहुत गर्व है, जो भौतिकवादी गतिविधियों पर आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है, लेकिन वास्तव में यह धर्मग्रंथों या इतिहास के पन्नों में निहित है।हाल के वर्षों में,बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का एक प्रमुख निर्धारकगिरता सामाजिक वातावरण है। ग़रीबी, अत्यधिक भीड़भाड़ वाला जीवन-यापन, बेरोज़गारी, नौकरी में असुरक्षा एवं असमानता,टूटे संबंधों एवं शादियों की बढ़ती संख्या,मानव निर्मित प्राकृतिक आपदाएँ, युद्ध, जातीय हिंसा के साथ-साथ महिलाओं, बच्चों और वृद्धों के खिलाफ हिंसा कुछ प्रमुख कारक हैं जिन्होंने स्थिति को बहुतहद तक बदतर बना दिया है। सामाजिक कुरीति की घटनाओं का घटित होनाविश्व के चैन सुकून के दिखावे की छवि पर से पर्दा हटा देता है। घोर ग़रीबी, पारिवारिक कलह हिंसा, घर में शराब या नशीले पदार्थों का दुरुपयोग, या माता-पिता की बीमारी और मृत्यु,कुछ ऐसे कारणहो सकते हैंजो युवाओं को अपने बल पर जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करते हैं। यहीं से उपेक्षित जीवन का दुष्चक्र आरंभ होता है जो व्यक्ति के आध्यात्मिक आनंद को बाधित करता है जिसके परिणामस्वरूप स्वयं की हानि होती

है, जो विश्व में किसी भी अन्य हानि की तुलना में हानिकारक सिद्ध होती है| यातना, अंग-भंग जैसे मुद्दे उत्पीड़न, धार्मिक या सामाजिक दबाव में बधियाकरण, लौंडेबाज़ी या यौन शोषण के कारण हो सकते हैं जो किसी की मनः स्थितिपर बुरा प्रभाव डालते हैंएवं पूर्ण मानवता के रास्ते में बाधित होते हैं।बड़ी संख्या में बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं, बुनियादी शिक्षा तक पहुंच पाने में सक्षम नहीं हैं,दयनीय अवस्था में रहते हैं तथा अमानवीय व्यवहार सहन करते हैं।कमज़ोर संस्थानों एवं आर्थिक संकट के साथ-साथ तीव्र गति से शहरी विकास के कारण ऐसी कुंठित पीढ़ी का स्पष्ट परिणाम भ्रष्टाचार एवं अपराध हैं।समाज का हर वर्ग भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है। लड़कियों एवं महिलाओं के प्रति हिंसा वर्ग, आय, निवास एवं सांस्कृतिक सीमाओं से परे है। शहरी क्षेत्रों में भी स्थिति बेहतर नहीं है, जहां घरेलू हिंसा, बलात्कार, आत्महत्या, दहेज हत्या के मामले समान रूप से प्रचलित हैं।शारीरिक, यौन और मनोवैज्ञानिक हिंसा मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गई है।हममें से प्रत्येक को सामाजिक विकृतियों से लड़ने की जिम्मेदारी लेनी होगी और समाज को संक्षारित करने की आवश्यकता है।उपनिषदों ने हमें वसुधैव कुटुंबकम (अर्थात संपूर्ण विश्व मेरा परिवार है) का आदर्श सिखाया है, फिर भी आज हम धर्म, क्षेत्र या यहां तक कि जाति के नाम पर अपने साथियों से लड़ते हैं।कुछ लोग मस्जिदों, मंदिरों और अन्य धार्मिक संस्थानों को महत्व देना चाहते हैं एवं उन सार्थक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने का प्रयास करते हैं जो सामाजिक विकास और समावेशन की ओर ले जा सकते हैं। ऐसे स्वार्थ निहित भारतीय भीषण गरीबी,पोषण के बेहद ख़राब मानक, सामाजिक अन्याय, इत्यादि को बनाए रखते हैं।उदाहरण केलिए, हम धार्मिक मुद्दों पर आमरण अनशन का सहारा ले सकते हैं और यहां तक कि इन पर लोगों का नरसंहार भी कर सकते हैंलेकिन भूख, बीमारी, कुपोषण या यहां तक कि सांप्रदायिक घृणा से उत्पन्न लोगों की तीव्र पीड़ा जैसे मुद्दों से अप्रभावित रहते हैं। क्या धर्म हमें ये सब सिखाता है?बिलकुल नहीं। यदि फिर भी हम धर्म के लिए यह सब करते हैं या इस प्रकार की बातों में विश्वास करते हैंतो हम धार्मिक नहीं बल्कि कट्टर या कट्टरपंथी हैं।सभी धर्मों का सार मानवता, समानता तथा लोगों ध्यान रखना है।हमें बच्चों में धार्मिक संस्कारों एवं अनुष्ठानों के ज्ञान के बजाय आध्यात्मिकता विकसित करने का प्रयास करना चाहिए, लोगों के प्रति प्रेम पैदा करना चाहिएन कि घृणा।हमारे कई धार्मिक दर्शन एवं ग्रंथ हमें अपरिग्रह (जमाखोरी)के ऊंचे आदर्श सिखाते हैं। किंतु हम प्रायः अपने कुछ धार्मिक प्रचारकों को भारी सामग्री जमा करते हुए, सत्ता एवं संपत्ति की लालसा करते हुए तथा यहां तक कि लोगों का यौन शोषण करते हुए भी देखते हैं।

हमारे धर्म हमें **अहिंसा** का सिद्धांत सिखाते हैं अर्थात शब्दों द्वारा या कर्मों द्वारा दूसरों को कष्ट नहीं पहुंचाना या पीड़ा नहीं पहुंचाना, फिर भी अधिकांश हिंसा धर्म के नाम पर ही की जाती है।धर्म हमें सिखाते हैं कि "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जिस प्रकार स्वयं से करते हो" तथा मुसीबत में फंसे लोगों के साथ करुणा का व्यवहार करो एवं उनका ध्यान रखो।हम किसी ऐसे व्यक्ति पर ध्यान नहीं देते हैं जो सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया हो एवं अगर उसे समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया गया तो वह मर सकता है, केवल इसलिए कि इससे हमें कुछ असुविधा हो सकती है या पुलिस हमसे मामले के बारे में पूछताछ करेगी।ऐसे सैकड़ों मामले हैं जो राहगीरों द्वारा समय पर मदद न मिल पाने के कारण मर जाते हैं।हम मानवीय आचरण एवं कार्य के तर्कसंगत सिद्धांतों की वकालत करते हैं किंतु अपने व्यक्तिगत जीवन मेंहम अंध अनुष्ठानों,अंधविश्वासों तथा रूढ़िवादिता से निर्देशित होते हैं।हमारे महान संत जैसे स्वामी दयानंद, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, टैगोर,कबीर आदि कुछ नाम हैं हमें सभी विवादों एवं नैतिक मुद्दों को तर्क द्वारा समर्थित परिस्थितियों की मांग के अधीन करना सिखाया है,लेकिन

हम छोटे-छोटे सामाजिक मुद्दों पर झगड़ना और लड़ना जारी रखते हैं।हम सामाजिक समानता, न्याय और पुरुषों की समानता के बारे में सिद्धांत बनाते हैं,फिर भी भारतीयों के एक बड़ेवर्ग के साथ अभी भी अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है।वहीं दूसरी ओर, हालाँकि हम सार्वजनिक जीवन में लोकतांत्रिक मूल्यों का दावा करते हैं फिर भी हममें से कुछ लोग व्यक्तिगत एवं राजनीतिक लाभ के लिए जाति कारक शोषण करते हैं।हम सामाजिक न्याय के सिद्धांत पढ़ाते हैं किंतु उनका अभ्यास नहीं करते| हम ऊँचे आदर्श तो सिखाते हैं, लेकिन हमारे कार्य दोहरेपन एवं पाखंड के बुनियादी रूपों को उजागर करते हैं|इस प्रकार, हम एक मूल्य संकट का सामना कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप गहरी सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक शून्यता पैदा हो गई है।

समाज में भ्रष्टाचार एक अन्य प्रकार की बीमारी है|यह व्यापक होता जा रहा है एवं इसकी जड़ें बहुतगहरी हो गयी हैं|धन और सत्ता की लालसा और साधारण जीवनशैली से असंतोष बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है।एक बड़ी सामाजिक बुराई यह भी हैकि मनुष्यों के बीच आपसी लगाव समाप्त हो रहा है|इससे परिवार टूट रहे हैं और पड़ोसी अजनबी हो रहे हैं।मित्रता की भावना कम हो रही है|मादक द्रव्यों का सेवन भी एक गंभीर सामाजिक बुराई है।जो नैतिक एवं आध्यात्मिक शून्यता पैदा हो गई है, उस पर टिप्पणी करते हुए जोशी(1994) ने उपयुक्त बात कही है, "मानवता आज एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है।आशा एवं निराशा, अभिमान एवं जुनून, आराम और भ्रम मानव हृदयों को असमान तथा अस्थिर माप से भर देते हैं|जबकि कुछ देशों द्वारा भौतिक प्रगति के शिखर को छू लेना मानवता को समग्र रूप से रोमांचित करता है|दुनिया के कई भागों में सामाजिक विघटन की गंभीर स्थिति कभी-कभी लोगों को सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या मानव जाति इससे उबर सकती है।"

सामाजिक विकृतियाँशिक्षा प्रणालियों जैसी समाजिक संस्थाओं में भी प्रतिबिंबित होती है। इस तथ्य के बावजूद कि वैचारिक स्तर पर, जैसा कि पीटर्स (1982) ने कहा था, शिक्षा सार्थकता की ओर एक दीक्षा है,लेकिन वास्तविक व्यवहार में, हमारे स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा अधिकांश मामलों में सिद्धांत एवं व्यवहार के बीच विरोधाभास का उदाहरण हैं।उदाहरण के लिए, निजी स्कूल जैसे कुछ शैक्षणिक संस्थान विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों के लिए हैंजो ग़रीबों की पहुंच से बाहर हैं|इससे सामाजिक विभाजन गहरा होता है जबकि इसे शिक्षा द्वारा पाटने की अपेक्षा की जाती है।इस विरोधाभास से समानता जैसे मानवीय मूल्यों का क्षरण होता है।मूल्यों का क्षरण केवल प्रासंगिक नहीं है बल्कि इसे एक घटना के रूप में देखा जा सकता है (इस स्थिति को प्रमाणित करने के लिए ठोस उदाहरणों की आवश्यकता है)।डेलर्स कमीशन की रिपोर्ट जिसका शीर्षक है"इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा" (1996) के अनुसार, शिक्षा तनाव के समाधान की कुंजी है: "भविष्य में आने वाली कई चुनौतियों के बावजूद, मानव जाति शांति एवं सामाजिक न्याय के लक्ष्यों को प्राप्त करने के अपने प्रयासों में शिक्षा को एक अनिवार्य संपत्ति के रूप में देखती है।"

रिपोर्ट में समाज में मौजूद कई तरह के तनावों का वर्णन किया गया है जो 21वीं सदी की समस्या पर केंद्रित हैं। इस रिपोर्ट में उल्लिखित कुछ तनाव इस प्रकार हैं:

1) वैश्विक एवं स्थानीय के बीच तनाव: लोगों को अपनी जड़ों से अलग हुए बिना एवं अपने राष्ट्र और अपने स्थानीय समुदाय के जीवन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए विश्व नागरिक बनने की आवश्यकता है।

2) परंपरा एवं आधुनिकता के बीच तनाव: इस तनाव को यह समझकर हल किया जा सकता है कि अतीत की ओर अपना रुख मोड़े बिना परिवर्तन के प्रति अनुकूलन कैसे संभव है|

3) प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता तथा अवसर की समानता की चिंता के बीच तनाव: आजीवन शिक्षा की अवधारणा पर पुनर्विचार एवं अद्यतन करना ताकि तीन शक्तियों में सामंजस्य बिठाया जा सके: प्रतिस्पर्धा, जो सहयोग प्रदान करती है,प्रोत्साहन, जो शक्ति देता है, एवं एकजुटता, जो जोड़ता है|

4) आध्यात्मिक और भौतिक के बीच तनाव:हम सभी को परंपराओं एवं मान्यताओं के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना शिक्षा का महान कार्य हैऔर अनेकवाद को पूरा सम्मान देते हुएअपने मन एवं आत्माओं को सार्वभौमिक स्तर तक ऊपर उठाने एवं कुछ हद तक, स्वयं कोऊपर उठाने के लिए|

केवल शिक्षा ही सामाजिक चेतना पैदा करके जो जाति, पंथ, धर्म, धन एवं अन्य मतभेदों से परे हो एक पीढ़ी को सशक्त बना सकती है|यह देश में 'समानता' का वातावरण बना सकती है और सामाजिक विकृतियों को दूर करके समाज में बदलाव आरंभ करने एवं बनाए रखने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर सकती है। इसलिएशिक्षा हमारे समाज में विभिन्न प्रकार के तनावों के समाधान की कुंजी है।समाज में व्याप्त कुरीतियों के अलावा प्रायःशिक्षक भी व्यवस्था को ठीक करने का प्रयास नहीं करते हैं।शिक्षण, जो पहले सबसे अच्छे व्यवसायों में से एक था, अब आजीविका कमाने के व्यवसायों में से एक बन गया है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य की समस्या का समाधान मुख्य रूप से शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई शिक्षा के माध्यम से है।

बोध प्रश्न 1

i) भारतीय समाज में विद्यमान किन्हीं दो सामाजिक विकृतियों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

ii) डेलर्स कमीशन की रिपोर्ट में वर्णित दो तनावों का उल्लेख करें

.....

.....

.....

.....

iii) शिक्षा एक पीढ़ी को कैसे सशक्त बना सकती है?

.....

.....

.....

.....

1.4 शिक्षा एवं मूल्यपरक शिक्षाके बीच संबंध

यदि हम शिक्षा की अवधारणा का विश्लेषण इस दृष्टिकोण से करने का प्रयास करें कि यह किस प्रकार के व्यवहार में संशोधन लाने वाली है, तो यह लगभग स्वयंसिद्ध है।मूल्य शिक्षा, और इससे भी अधिक, नैतिक शिक्षा, एक अनिवार्य शर्त है - शिक्षा की अवधारणा की एक अनिवार्य शर्त। इस आवश्यक घटक को शामिल किए बिना, शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य, जो मुख्य रूप से अच्छे इंसानों का विकास करना है, पूरा नहीं होगा। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कितना भी जानकार, कुशल, बुद्धिमान या सक्षम क्यों न हो, को शिक्षित व्यक्तियों की श्रेणी में उस समय तक शामिल नहीं किया जा सकता है जब तक कि उनमें ऐसे दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित न हो जाएं जो सामाजिक रूप से सार्थक हों। इसी प्रकार सीखने-सिखाने की कोई भी प्रक्रिया वैधानिक रूप से शिक्षा नहीं कही जा सकती यदि यह व्यक्ति को जैविक से मनुष्य में बदलने में विफ़ल रहती है।यह कहना विरोधाभास होगा कि एक व्यक्ति उच्च शिक्षित है लेकिन अपने विचारों और कार्यों में मूल्यों का प्रदर्शन नहीं करता है।एक "शिक्षित व्यक्ति के पास अनिवार्य रूप से मूल्यों का एक समूह होता है, जो सोचने, महसूस करने और व्यवहार के माध्यम से उसके जीवन को प्रभावित करता है। इन मूल्य पहलुओं से रहितशिक्षा केवल प्रारंभिक स्तरीय साहित्यिक और अंकगणितीय कौशल विकसित करने का एक उपकरण बनकर रह जाती है| संज्ञानात्मक या मनोप्रेरक कौशल का विकास, किसी व्यक्ति को पर्यावरण में हेरफेर करने में सक्षम और कुशल बनाना है यह केवल समावेशी और मानवीय समाज एक अच्छी तरह से समायोजित मनुष्य बनने के साधन के रूप में महत्वपूर्ण है।मानव समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व हो सकता है इसे केवल एक प्रकार की शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जो मूल्य प्रणाली में गहराई से निहित है।मानवीय मूल्य किसी के हितों का त्याग किए बिना अपने साथ-साथ दूसरों के हितों का भी ख्याल रखते हैं।

1.5 मूल्योन्मुख शिक्षा की आवश्यकता

हमें जिन बातों का ज्ञान है और जिसे सत्य, अच्छा और तर्कसंगत मानते हैं एवं जिसे हम अपने जीवन में अपनाते हैं, उसके बीच के विरोधाभास ने मानवता के सामने एक समस्या खड़ी कर दी है। मानव समाज के ताने-बाने को काफी हद तक हिंसा, आतंकवाद, चोरी, टैक्स चोरी, प्रदूषण, जघन्य अपराध आदि से खतरा है। हमारा सामाजिक परिदृश्य है हमारी गलत शिक्षा प्रणाली और बच्चों के पालन-पोषण की प्रथाओं के परिणामों के कारण माना जा सकता है। नई शिक्षा नीति के निर्माताओं (1986) ने इन कमियों को अच्छी तरह से पहचाना और शिक्षा के लिए यह सिफारिश की कि सार्थक हो, मूल्योन्मुख हो। शिक्षा का मूल्य संदर्भ, जो कमज़ोर हो गया है, उसेवापस लाने की जरूरत है। यह तभी संभव है जब हम मूल्यों को शिक्षा की अवधारणा के लिए आवश्यक मानें। आज हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा मनुष्य का संपूर्ण विकास हो, न कि केवल आजीविका कमाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल पर केंद्रित हो|

समाज में, विशेषकर भारतीय समाज में ऊपर से नीचे तक व्यापक भ्रष्टाचार स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि समाज बीमार हो गया है; धन का लालच सभी तर्कसंगत सीमाओं को पार कर गया है। अस्पतालों में डॉक्टर किसी मरते हुए आदमी का इलाज तब तक नहीं करते जब तक पैसा जमा न कर दिया जाए। समाज के हर वर्ग में भ्रष्टाचार की खबरें मामूली बात हैं। पुलिस

और वकील जैसे कानून के रखवाले भ्रष्टाचार से परे नहीं हैं। यहां तक कि सार्वजनिक सामान और सेवाएं प्रदान करने वाले भीजैसे डॉक्टर और शिक्षक अपवाद नहीं हैं। मजबूरन डॉक्टर जनता की असुविधा और कभी-कभी मानव जीवन की हानि पर विचार किए बिना अधिकारियों को मजबूर करके उनकी मांगें पूरी करवाने के लिए हड़ताल पर चले जाते हैं| फिर मिलावट की समस्या है| लोग खाने-पीने की चीजों में मिलावट करने से नहीं हिचकिचाते जैसे दूध और दूध से बने उत्पाद, अनाज, मसाले, मिनरल वाटर, हरी सब्जियाँ और फल। कुछ उत्पादों में वे थोड़े सेलाभ के लिए हानिकारक रसायन मिलाते हैं। यहां तक कि जीवनरक्षक दवाओं को भी नहीं बख्शा जाता और बाजार में कई नकली दवाएं भी मौजूद हैं। यह स्थिति है भारतीय समाज की| सबसे बढ़कर, अगर ऐसे भ्रष्ट आचरण में शामिल कोई व्यक्ति रंगे हाथों पकड़ा जाता हैतो जांच एजेंसी को रिश्वत दे कर आरोपों से बरी हो जाता है| मामले को कमज़ोर करने के लिए सबूतों को जानबूझकर नष्ट किया जाता हैऔर अपराधी सज़ा से बच भी जाते हैं। यही कारण है कि भारत का मानव विकास सूचकांक नीचे चला गया है| यूएनडीपी के हाल ही के एक सर्वेक्षण के अनुसार, मानव विकास सूचकांक पर भारत की स्थिति इस हद तक ख़राब हो गयी है, कि विश्व के कुल 196 देशों में सर्वेक्षण आयोजित किया गयाउनमें भारत का स्थान 134वां है|ऊपर वर्णित सामाजिक परिदृश्य, विचारशील लोगों को हमारी शिक्षा की अवधारणा, प्रक्रिया और उत्पाद पर नए सिरे से विचार करने के लिए मजबूर करता है। हम अपने स्कूलों, कॉलेजों या विश्वविद्यालयों में जो शिक्षा प्राप्त करते हैं क्या वह सार्थक है? क्या यह लोगों में कोई ज्ञानोदय ला रहा है जो इसे लाना चाहिए था? क्या तथाकथित पढ़े-लिखे लोगों को अपने अधीन काम करने वालों के साथ न्याय करने का कोई विचार आता है? क्या वे दूसरों के हितों का वैसे ही ध्यान रखते हैं जैसे वे अपने हितों का ध्यान रखते हैं? यदि उत्तर 'नहीं' है, तो हमें पाठ्यक्रम में मूल्य आधारित शिक्षा को शामिल करने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जिस ग्रह पर हम रहते हैं और जिसके हम नागरिक हैं, वह एक एकल, जीवित स्पंदनशील इकाई है। मानव जाति आपस में जुड़ा हुआएक विस्तारित परिवार है - जैसा कि वेदों में दर्शाया गया है वसुधैव कुटुंबकुंज और जाति, धर्म, राष्ट्रीयता और विचारधारा, आर्थिक और सामाजिक स्थिति को वैश्विक एकता के रास्ते में नहीं आना चाहिए। हमारे ग्रह की पारिस्थितिकी को विवेकहीन और क्रूर शोषण से बचाना होगा और भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करना होगा। निरंकुश उपभोग पैटर्न की जगह विकास सीमाओं पर आधारित अधिक न्यायसंगत उपभोग पैटर्न होना चाहिए| द्वेष, कट्टरता, कट्टरवाद, धर्मांधता, लालच एवं ईर्ष्या चाहे व्यक्तियों, समूहों या राष्ट्रों के बीच हों, येसंक्षारक भावनाएँ हैं जिसे दूर किया जाना चाहिए| जैसे-जैसे हम अपनी नई वैश्विक जागरूकता में बदलाव कर रहे हैं प्रेम, करुणा, देखभाल, परोपकार, मित्रताएवं सहयोग वे तत्व हैं जिन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए(करण सिंह 1996)। समग्र शिक्षा जो मानव व्यक्तित्व के कई आयामों जैसे कि शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक को स्वीकार करती है वर्तमान समाज की सामाजिक अस्वस्थता का एकमात्र इलाज हो सकता है|सामाजिक अस्वस्थता से निपटने की चुनौती को केवल एक समूह या समुदाय द्वारा अलग-अलग नहीं निपटा जा सकता है; इसके लिए एक समग्र दृष्टिकोण एवं राष्ट्रीय सहमति की आवश्यकता है। धार्मिक नेताओं, पेशेवर सामुदायिक कार्यकर्ताओं, राजनीतिक विचारकों और नागरिक समाज संगठनों को सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के लिए सामाजिक रूप से सुदृढ़ हस्तक्षेप और रणनीतियाँ विकसित करनी चाहिए| युवाओं के जीवन को समझने और समाज की चुनौतियों से निपटने की उपयोगी तकनीकों के माध्यम से उन्हें आत्मविश्वास देने के लिए माता-पिता को कदम उठाने चाहिए।

बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए एक स्थिर पारिवारिक वातावरण आवश्यक है। युवाओं को सार्थक, सुदृढ़ और स्थिर पारिवारिक जीवन के मूल्य समझना चाहिए। इस प्रकार शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में ज्ञान प्रदान करने के अतिरिक्त आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं एकीकृत विकास करना होना चाहिए। उसे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की जिम्मेदारियाँ उठाने में सक्षम आदर्श नागरिक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

1.5.1 शिक्षकों की भूमिका

छात्रों के सीखने में शिक्षकों की केंद्रीय भूमिका होती है| वे उन्हें बताते हैं कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर कैसे सुधार किया जाए। शिक्षक को वैध रूप से मूल्यों में निर्देश प्रदान करने के लिए, पहले स्वयं ऐसे मूल्यों के प्रति उन्मुख होना होगा। शिक्षकों को मानवीय मूल्यों में उन्मुख करना या उनके पाठ्यक्रम में मूल्य पहलू जोड़ना पर्याप्त नहीं है; सीखने-सिखाने की सभी प्रक्रिया को ही ऐसे दिशानिर्देश की आवश्यकता है। स्वयं शिक्षक द्वारा स्थापित उदाहरण प्रार्थना गाने एवं बच्चों के लिए व्याख्यान आयोजित करने से अधिक शक्तिशाली हैं। शिक्षकों को मूल्यों वाले मनुष्य का उदाहरण स्थापित करने की आवश्यकता है।कक्षा में या बाहर बच्चों के साथ उनकी सभी बातचीत यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को एक व्यक्ति के रूप में उचित देखभाल, प्यार और सम्मान दिया जाए और शिक्षक के किसी भी कार्य से उनके प्रति अन्याय या भेदभाव नहीं होना चाहिए। उनके पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का एक अलग घटक जोड़ने से कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा नहीं होने वाला है। बल्कि एक शिक्षक को सादगी मिसाल कायम करने की आवश्यकता है, विद्यालय के भौतिक संसाधनों के उपयोग में मितव्ययता, विनम्रता का प्रदर्शन करना, विद्यालय और समुदाय में अन्याय के विरुद्ध खड़े होना और कक्षा में नियमित निर्देश को सुदृढ़ करना।अपने छात्रों और समुदायों की सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने में सभी शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अच्छा शिक्षण सांस्कृतिक और भाषा की पृष्ठभूमि पर आधारित होता है, अर्थ निकालने के तरीक़े और पूर्व ज्ञान जो सभी बच्चे कक्षा में लाते हैं। प्रभावी शिक्षक:

- अन्य संस्कृतियों के बारे में अपना ज्ञान विकसित करें;
- सभी बच्चों से उच्च अपेक्षाएँ रखें;
- एक मनोरम वातावरण प्रदान करें जो सभी बच्चों की पुष्टि करे;
- छात्रों की शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु परिवार के सदस्यों तथा समुदाय के साथ काम करें सांस्कृतिक रूप से सूचित शिक्षण सभी बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं एवं सहयोग के पुल बनाने का समर्थन करता है|

सांस्कृतिक रूप से सूचित शिक्षण सभी बच्चों की सीखने की जरूरतों का समर्थन करता है, भले ही उनकी सांस्कृतिक या भाषाई पृष्ठभूमि कुछ भी हो।कक्षा में एक सकारात्मक माहौल बनाकर और शिक्षक द्वारा धीरे-धीरे लेकिन परस्पर संवादात्मक शिक्षण की प्रक्रिया के माध्यम से एफडीवाई बच्चों में सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा देता है जो अंततः सामाजिक बुराइयों से लड़ने में समाज की मदद करता है|

1.6 गतिविधियां

अनुशासन: कक्षा में एक ऐसा लोकाचार बनाए रखें जो समानता की भावना के साथ सकारात्मक और सर्व समावेशी हो, इससे बच्चों को मूल्यों के पाठ से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में मदद मिलेगी। बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं और अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को साझा करने में सक्षम होते हैंजब उन्हें पता होता है कि इनका हमेशा स्वागत होगा और महत्व दिया जाएगा|

चिंतन: यह वह समय है जब बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे एक से चार मिनट तक शांत बैठे रहें, यह बच्चों के लिए कई तरह से मददगार साबित हुआ है।यह सांस और दिल की धड़कन को नियंत्रित करता है और शरीर को शांत करता है और आराम देता है। यह मन को शांत करता है, ध्यान केंद्रित करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। यह जागरूकता और अंतर्ज्ञान विकसित करने में मदद करता है, और बच्चे अपनी भावनाओं के संपर्क में आने में अधिक सक्षम होते हैं।

कहानी सुनाना: जहां तक संभव हो पाठ के लिए प्रेरणा के रूप में कहानी का उपयोग करना बहुत लाभप्रद होता है| यह मूल्यों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकता है कि जागरूकता के सभी स्तरों तक पहुँचा जा सके| यह भावनाएँ उत्पन्न करता है, ध्यान आकर्षित करता है और अक्सर प्रेरित करता है। श्रोताअपने स्वयं के अनुभवों में समानताएं ढूंढने में सक्षम हैं जो भविष्य की कठिन परिस्थितियों में मदद कर सकते हैं। पाठ के लिए किसी प्रेरणा का उपयोग करें जो किसी कहानी, चर्चा, अनुभव या कलाकृति आदि पर आधारित हो सकता है। सीखने का उद्देश्य स्पष्ट किया जाना चाहिए, जैसेकि, यह समझने का प्रयास कि ईमानदारी का मूल्य हमारे व्यवहार के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक क्यों है।

चर्चा: इसके बाद शिक्षक के नेतृत्व वाली चर्चा है जो पाठ के मूल में निहित है।सावधानीपूर्वक प्रश्न करने से विद्यार्थियों को अर्थ की गहरी समझ प्राप्त होती है, उन्हें मूल्य को अपने अनुभव के क्षेत्रों में अनुवाद करने में मदद मिलती है।

आनंद: पाठ का अगला भाग एक गतिविधि होगी जो विद्यार्थियों को मूल्य के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करेगी।आनंद मूल्य पाठों प्रमुख लक्षण होना चाहिएऔर यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।विशिष्ट रूप से, शिक्षक ऐसी गतिविधियाँ कर सकते हैं जिनसे बच्चों में मूल्य का विकास हो। इनमें से कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

1) विभिन्न धर्मों के धर्मग्रंथों से प्रासंगिक कहानियों, कविताओं, पाठ के कुछ हिस्सों का वर्णन जो अच्छे कार्यों की आवश्यकता पर जोर देते हैं। ऐसे वर्णन न केवल शिक्षकों द्वारा, बल्कि बच्चों द्वारा भी हो सकते हैं;
2) भूमिका निभाना;
3) कहानियों, महाकाव्यों पर आधारित नाटक का मंचन;
4) त्योहारों का उत्सव;
5) पर्यावरण संरक्षण हेतु गतिविधियाँ जैसे पेड़लगाना;
6) कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की देखभाल करना जैसे स्कूल से बाहर के बच्चों को

पढ़ाना; ज़रूरतमंदों कीमदद करना, एवं

7) उन इलाकों का दौरा करें जहां बच्चे योगदान दे सकते हैं।सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम का यह भाग समाप्त किया जाना है क्योंकि शिक्षक प्रशिक्षकों पाठ्यक्रम का के लिए इसका मतलब नहीं है बल्कि यह शिक्षकों के लिए है।

बोध प्रश्न 2

i) दो गतिविधियों का उल्लेख करें जो मूल्य बोध की ओर ले जाती हैं?

.....

.....

.....

ii) शिक्षा और मूल्य शिक्षा के बीच क्या संबंध है?

.....

.....

.....

iii) शिक्षकों को मूल्यों की शिक्षा कैसे देनी चाहिए?

.....

.....

.....

iv) वैश्विक एकता की अवधारणा क्या है?

.....

.....

.....

1.7 सारांश

चूँकि यह प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए मूल्य शिक्षा के पूरे कार्यक्रम की परिचयात्मक इकाई है, यह ज़रूरी है कि हम इसके लिए एक उचित परिस्थिति बनाएं और इसकी आवश्यकता को सही ठहराएं, ताकि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षक इसे आवश्यक समझें।हम क्या कहते हैं और क्या करते हैं, इसे लेकर हमारे समाज में विसंगतियां मौजूद हैं इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह इकाई विरोधाभासों को चित्रित करती है|हम सामाजिक न्याय के ऊंचे आदर्शों का प्रचार करते हैं किंतु हमारे कार्य उन्हें धोखा देते हैं और हमारे दोहरेपन तथा पाखंड को सामने लाते हैं। इस प्रकार, हम एक मूल्य संकट का सामना कर रहे हैंजिसे अनिवार्य रूप से हल करने की आवश्यकता है।आज हम जिस आध्यात्मिक शून्यता का सामना कर रहे हैं उसका प्रेम, देखभाल, करुणा और न्याय से परिपूर्ण होना आवश्यक है।हमने यह भी चर्चा की है कि हमारी शिक्षा प्रणाली की कमज़ोरी और विशेष रूप से शिक्षकों की भूमिका के कारण ऐसी स्थिति बनी है।अध्यापन, जो पहले सबसे महान व्यवसायों में से एक था, अब यह केवल

आजीविका कमाने का व्यवसाय बन गया है और इससे अधिक कुछ नहीं।नई शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षा की इस कमी को भली-भांति महसूस किया। इसके अनुसार जैविक शिशु को सामाजिक रूप से सार्थक और सक्षम इंसान में परिवर्तित करने में सार्थक भूमिका निभाने में सक्षम होने के लिए शिक्षा को मूल्य उन्मुख होना चाहिए। शिक्षा के मूल्य संदर्भ जो जीर्ण-शीर्ण हो गया हैउसे वापस लाने की आवश्यकता है।यह तभी संभव है जब हम दूसरों की देखभाल और न्याय जैसे मूल्यों को शिक्षा की प्रक्रिया के लिए आवश्यक मानें।शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है यदि वह कक्षा के अंदर और बाहर अपनी सभी बातचीत में मानवीय विचारों का ध्यान रखे।शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया में मूल्य अभिविन्यास की आवश्यकता को कभी भी अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता है। "इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा" पर डेलर्स कमीशन ने एक साथ रहना सीखने-दूसरों के साथ सीखने के महत्व को महसूस किया एवं इस अवधारणा को शिक्षा के स्तंभों में से एक का नाम दिया।संक्षेप में, वैश्विक सामाजिक अस्वस्थता का एकमात्र उपाय शिक्षा है, जिसकी सही कल्पना की गई है और जिसका सही ढंग से अभ्यास किया गया है।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) धर्म, क्षेत्र और जाति के नाम पर अपने साथियों से लड़ना।

ख) धार्मिक मुद्दों पर लड़ना और यहां तक कि ऐसे मुद्दों पर लोगों का नरसंहार करना।

ii) क) वैश्विक और स्थानीय के बीच तनाव|

ख) परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव।

iii) शिक्षा ही सामाजिक चेतना पैदा करके एक पीढ़ी को सशक्त बना सकती है जो जाति, पंथ, धर्म, धन और अन्य मतभेदों से परे हो सकता है।शिक्षा ही देश में 'समता' का माहौल बना सकती है।

बोध प्रश्न 2

i) क) प्रासंगिक कहानियों, कविताओं, विभिन्न धर्म ग्रंथों के पाठ के कुछ हिस्सों का वर्णन|

ख) भूमिका निभाना।

ii) क) शिक्षण-सीखने की कोई भी प्रक्रिया वैध रूप से शिक्षा नहीं कही जा सकती यदि वह व्यक्ति को जैविक से मानव में बदलने में विफ़ल रहती है|

ख) मानव समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के बारे में सीखना एक प्रकार की शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो मूल्य प्रणाली में गहराई से निहित है।

iii) क) अध्यापन-शिक्षण की प्रक्रिया में मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने के लिए अभिविन्यास की आवश्यकता होती है।

ख) शिक्षक को सरलता, मितव्ययता, विद्यालय संसाधनों के उपयोग में मितव्ययिता और विनम्रता का उदाहरण स्थापित करना होगा।

iv) अवधारणा यह है कि मानव जाति एक परस्पर जुड़ा हुआ, विस्तारित परिवार है-जैसा कि

वेदों में कहा गया है वसुधैव कुटुंबकम, नस्ल, धर्म, राष्ट्रीयता तथा विचारधारा, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अंतर वैश्विक इकाई के रास्ते में नहीं आना चाहिए।

1.9 सन्दर्भ

डागर बी.एस. और ढुल, आई. (1995) पर्सपेक्टिव्स इन मोरल एजुकेशन, नई दिल्ली:उप्पल पब्लिशिंग हाउस

जैक्स, डेलर्स (1 996) लर्निंग द ट्रेजर विदिन - रिपोर्ट ऑफ द इंटरनेशनल शिक्षा आयोग, पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन

जोशी, केएमटी (1995) में बी.एस. डागर और आई. ढुल. नैतिक शिक्षा में परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: उप्पल पब्लिशिंग हाउस

करण सिंह (1996) वैश्विक समाज के लिए शिक्षा जैक्स डेलर्स में, सीखना भीतर का खजाना - शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग की रिपोर्ट,पेरिस: यूनेस्को एमटीब्लिशिंग

पीटर्स, आर.एस. (1966) एथिक्स एंड एजुकेशन, लंदन: एलन एंड अनविन

पीटर्स, आर.एस. (1982) डाउनी और केली में। नैतिक शिक्षा, लंदन: हार्पर और पंक्ति.

इकाई 2 नैतिकता एवं नैतिक शिक्षा की अवधारणा

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 नैतिक चेतना

2.4 नैतिक शिक्षा बनाम धार्मिक शिक्षा

2.4.1 नैतिक शिक्षा बनाम धार्मिक शिक्षा में अंतर

2.5 नैतिकता का सिद्धांत

2.5.1 अच्छाई का वस्तुनिष्ठ सिद्धांत

2.5.2 नैतिकता की भाषा

2.6 नैतिकता का स्वरूप

2.7 तर्कसंगत व्यवहार के मानदंड

2.8 नैतिक निर्देश, नैतिक प्रशिक्षण बनाम नैतिक शिक्षा के बीच अंतर

2.9 नैतिक निर्णय और उनके मानदंड

2.10 सारांश

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.12 सन्दर्भ

2.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाई में आपने हमारे समाज को प्रभावित करने वाली सामाजिक विकृतियों के बारे में अध्ययन किया, जोकि सामाजिक एवं नैतिक समस्याओं की विशेषता है जो भारतीय समाज के सामाजिक पतन का कारण बन रही हैं।हमने देखा है कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, हिंसा, आतंकवाद, अपराध, नफ़रत, धर्मांधता, कट्टरवाद आदि के कारण समाज को होने वाली हानि के कारण आज भारतीय समाज का स्वरूप संकट में है एवं पर्यावरण को प्रदूषण और अस्थायित्व विकास के माध्यम से। इस प्रकार के सामाजिक परिदृश्यों में मानवीय मूल्यों, विशेषकर नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा की आवश्यकता होती है। आपने यह भी सीखा कि मानवीय मूल्यों से रहित शिक्षा सही अर्थ में शिक्षा नहीं है। मानवीय मूल्यों के बिना यह निर्देश, साक्षरता विकास, प्रशिक्षण, विचार आदि जैसी कोई भी चीज़ हो सकती है लेकिन शिक्षा नहीं।इसलिए, शिक्षा, जिसका उद्देश्य संपूर्ण मानव का विकास करना है, आवश्यकतानुसार, मूल्योन्मुखी होना चाहिए। विभिन्न प्रकार के मूल्यों के बीचशिक्षा के लिए नैतिक मूल्य सबसे जरूरी हैं।यह मनुष्य के अंदर की नैतिक चेतना है, जो किसी व्यक्ति को वास्तव में शिक्षित कहलाने के योग्य बनाती है।

इस इकाई में हम नैतिकता के साथ-साथ नैतिक शिक्षा की अवधारणा को भी स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बादआप:

- नैतिक चेतना की प्रकृति और शिक्षा के साथ उसके संबंध को परिभाषित कर सकेंगे;
- नैतिक शिक्षा को धार्मिक शिक्षा में अंतर कर सकेंगे;
- धार्मिक शिक्षा और नैतिकता के बीच संबंध आवश्यक नहीं है इसको चित्रित कर सकेंगे;
- नैतिकता के विषय (सामग्री) को उसके शैली या रूप से अलग कर सकेंगे;
- हेगेल द्वारा दिए गए तर्कसंगत व्यवहार के चार मानदंडों को उदाहरण सहित स्पष्ट कर
- सकेंगे;
- नैतिक शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे और इसे नैतिक शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण से अलग कर सकेंगे;
- किसी भी नैतिक निर्णय के मानदंड बता और समझा सकेंगे, और
- नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति की विशेषताओं को परिभाषित करेंगे|

2.3 नैतिक चेतना

बुद्धि की तरह नैतिक चेतना भी एक प्राकृतिक निधि है, मानव व्यक्तित्व में इसके पूर्ण विकास के लिए एक उपयुक्त वातावरण या शिक्षा की आवश्यकता होती है।यह जन्मजात है कि मनुष्य स्वभाव से अच्छा है, किंतु उस अर्थ में नहीं जैसा कि रूसो एवं अन्य रोमानी प्रकृतिवादियों ने दावा किया है।वास्तव में मनुष्य दो प्रकार की शक्तियों के साथ पैदा होता है: एक,'आत्म-संरक्षण' जो सहज ज्ञान के साथ आक्रामकता, क्रोध, ईर्ष्या, भय, सेक्स की लालसा इत्यादि की ओर ले जाती है;और दूसरी,'सामाजिक संरक्षण' जो प्यार, स्नेह, सहानुभूति, देखभाल, करुणा, सहानुभूति, दूसरों के प्रति विचार, तर्कसंगतता आदि की ओर ले जाता है।फ्रायडियन शब्दावली में पहली प्रवृत्ति पहचान-संबंधित है और बाद वालीअति-अहंकार से संबंधित है एवं अहंकार स्टीयरिंग के रूप में कार्य करता हैजो दोनों को नियंत्रित करता है, उनके बीच संतुलन बनाता है (सिगमंड फ्रायड के अनुसार मानव मानस के 3 भाग होते हैं-पहचान, अहंकार और महा-अहंकार।पहचान आनंद चाहता है और आवेगपूर्ण है, महा-अहंकार नैतिक संरक्षक के रूप में कार्य करता है और अहंकार दो प्रवृत्तियों में संतुलन बनाता है ताकि आवेगों को सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से व्यक्त किया जा सके)।

नैतिक चेतना का 'सामाजिक संरक्षण' से गहरा संबंध है। इसलिए, सामाजिक संदर्भ के बिना नैतिकता या नैतिक चेतना का कोई अर्थ और प्रासंगिकता नहीं है।हम नैतिक रूप से जागरूक हैं यदि हम दूसरों की चेतना या भावनाओं का उसी तरह ख्याल रखते हैं जैसे हम अपनी भावनाओं का रखते हैं।यदि दूसरों के दुःख या कष्ट उसी प्रकार हमारे हृदय वैसे ही विचलित नहीं कर पातेजैसे अपनों एवं प्रियजनों के दुःख-कष्ट, इसका अर्थ यह है कि हममें उसी अनुपात में नैतिक चेतना का अभाव है।ऐसी चेतना सहज या जन्मजात होती है, जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, पोषण शिक्षा सहित मनुष्य पर कार्य करने वाली पर्यावरणीय शक्तियों पर निर्भर करता है।कुछ लोगों का दृढ़ विश्वास है कि नैतिक व्यवहार या पूर्ण नैतिकता में विकसित

होने के लिए चेतना के लिए सबसे उपयुक्त मंच धर्म के माध्यम से है पूजा स्थलों की यात्रा, धार्मिक गुरुओं के उपदेश सुनना आदि। उनका मानना है कि धर्म और नैतिकता के बीच घनिष्ठ और आवश्यक संबंध है। लेकिन कई अन्य लोगों के लिए नैतिकता को धर्म से जोड़ने का दावा अत्यधिक विवादास्पद है। अगले भाग में हम नैतिकता और धर्म के बीच संबंध के दावे की वैधता की जांच करेंगे।

2.4 नैतिक शिक्षा बनाम धार्मिक शिक्षा

'नैतिक रूप से कौन सा कार्य करने योग्य है?' के मुद्दे को सुलझाने के लिए बहुत से लोग अंतिम उत्तर गीता, बाइबिल, क़ुरान या गुरु ग्रंथ साहिब आदि जैसे धर्मग्रंथों या उच्च पदों पर आसीन उपदेशकों (मठाधीश, शंकराचार्य, मौलवी, पुजारी, ग्रंथी आदि)) से लेना पसंद करतेहैं।ऐसे लोगों के लिए, ये स्रोत ही वैध प्राधिकारी हैं जो अंततः नैतिक आचरण के मुद्दे को सुलझा सकते हैं। भारत में कुछ सांप्रदायिक स्कूल धार्मिक शिक्षा को नैतिक शिक्षा के साथ जोड़ने की इस परंपरा का पालन करते हैं| इन विद्यालयों में प्रतिदिन पूजा-अर्चना होती है तथा ज़ीरो पीरियड में कुछ धार्मिक उपदेश और कुछ नैतिकता से संबंधित उपाख्यान।वे इसे "धर्म शिक्षा" काल या धार्मिक शिक्षा काल का नाम देते हैं।किंतुवास्तव में, धर्म शब्द को बहुत व्यापक और धर्मनिरपेक्ष अर्थ प्राप्त है।कई प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा धर्म की व्याख्या इस प्रकार की गई है, सही आचरण, विचार और कार्य के साथ कर्तव्य में ईमानदारी| चूंकि भारत ने धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र को जीवन शैली के रूप में अपनाया है, अतः किसी विशेष संप्रदाय या धर्म से जुड़ी नैतिक शिक्षा की ऐसी धारणाको देश के भावी नागरिकों की शिक्षा के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है।ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारा समाज बहु-जातीय, बहु-सांस्कृतिक एवं बहु-धार्मिक है।स्कूल ऐसे कार्यों का निर्वहन करने के लिए हैं जो धार्मिक शिक्षा से मुक्त हों। ऐसी सोच के पीछे विचार यह है कि धर्म पूरी तरह से एक व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है जबकि स्कूल संपूर्ण समाज का एक अंग है जिसका उद्देश्य बच्चों में बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक कौशल तथा दृष्टिकोण का विकास करना है।व्यक्तित्व के नैतिक पहलू का विकास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हैकिंतु इसे धार्मिक शिक्षा के माध्यम से विकसित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि धार्मिक शिक्षाजिसकी हम नीचे चर्चा करेंगे, वास्तव में शिक्षण प्रक्रिया के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती है।अब हम नैतिक शिक्षा और धार्मिक शिक्षा के बीच जो अंतर है उसका अध्ययन करते हैं।

2.4.1 नैतिक शिक्षा बनाम धार्मिक शिक्षा में अंतर

i) धर्म के बिना जीवन संभव है, किंतु हमारे व्यवहार को निर्देशित करने वाले नैतिक मूल्यों के बिना जीवन अकल्पनीय है। विश्व में ऐसे बहुत से लोग हैं जो किसी भी धर्म या यहां तक कि भगवान के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते हैं, किंतु वे नैतिक मूल्यों में विश्वास करते हैं। वे नैतिक रूप से अच्छे या उन लोगों से भी बेहतर हो सकते हैं जो किसी धर्म के अनुयायी हैं। यही कारण है कि हम नैतिकता के दृष्टिकोण के रूप में "धर्मनिरपेक्ष नैतिकता" की बात करते हैं, जो सभी धर्मों से स्वतंत्र है। अतः, नैतिकता एवं धर्म के बीच कोई तार्किक संबंध नहीं है।

ii) यदि हम नैतिकता को धर्म से जोड़ना चाहते हैं तो हम स्वयं को ऐसी स्थिति में शामिल कर सकते हैं जो निश्चित रूप से शिक्षा की अवधारणा के प्रतिकूल है।धर्म से उत्पन्न या उससे जुड़ी नैतिकता अनिवार्य रूप से सत्तावादी होनी चाहिए, क्योंकि आचरण के ऐसे

सिद्धांत या तो धर्मग्रंथ उत्पन्न होते हैं या किसी धार्मिक गुरु द्वारा निर्देशित, किंतु यदि हम किसी विशेष आचार संहिता को इसलिए स्वीकार नहीं करते हैं कि यह किसी विशेष धार्मिक विश्वास द्वारा अनुशंसित या उससे ली गई है, बल्कि इनके अलावा अन्य कारणों से (उदाहरण के लिए तर्कसंगत सोच) स्वीकार करते हैंतो हमारी नैतिकता धार्मिक नहीं है।उदाहरण के लिए, हम अपने कार्यों को धार्मिक कारणों के अलावा अन्य कारणों पर आधारित कर सकते हैं, और उसी प्रकार अपना वचन निभाएँ, अपना कर्तव्य ईमानदारी एवं प्रतिबद्धता के साथ पूरा करें, सत्य बोलेंआदि।ऐसा व्यवहार धार्मिक नैतिकता पर आधारित नहीं है और न इसे सत्तावादी माना जाएगा क्योंकि यह तर्कसंगतता पर आधारित है और सामाजिक संदर्भ से उभरता है।कुछ संदर्भों में जहां झूठ बोलना व्यापक मानव हित में है या ऐसा व्यवहार है जो किसी निर्दोष व्यक्ति की जान बचा सकता है, कोई भी इस बात से सहमत होगा कि ऐसा झूठ सच बोलने से बेहतर होगा।ऐसा सिद्धांत अन्य मानवीय गुणों जैसे धोखा न देना, वफ़ादारी, अहिंसा आदि पर बहुत अच्छी तरह से लागू हो सकता है| क्या आपको याद नहीं है कि श्री राम, जिन्हें कई लोग भगवान का अवतार मानते हैं, ने भी बाली को मारा था?इसका अर्थ यह है कि असाधारण परिस्थितियों में भी तथाकथित सार्वभौमिक मूल्यों का बलिदान किया जा सकता है यदि ऐसा करने से किसी बड़े मानवीय उद्देश्य की पूर्ति होती है।

iii) नैतिकता को धर्म से जोड़ना अस्वीकार्य है क्योंकि यह व्यक्ति को अपने विवेक के संदर्भ के अनुसार नैतिकता के सिद्धांतों को चुनने के अधिकार से वंचित करता है।ऐसा प्रस्ताव अस्वीकार्य है क्योंकि यह नैतिक ज्ञान के किसी भी विकास या वृद्धि को अवरुद्ध कर देता है। तथ्य यह है कि हमारी नैतिक समझ ऐसी होनी चाहिए जो हमें नई नैतिक समस्याओं और चुनौतियों का सामना करने और उनसे निपटने के लिए अपने सिद्धांतों को संशोधित करने में सक्षम बनाए।लेकिन अगर हम नैतिकता को धार्मिक सत्ता से जोड़ दें तो नैतिक सिद्धांतों में बदलाव की कल्पना नहीं की जा सकेगी।जन्म नियंत्रण के साधन के रूप में गर्भनिरोधक के उपयोग के सवाल पर, धर्म अस्पष्ट है।यह एक नैतिक समस्या है जिसका समाधान मनुष्य की सोच पर निर्भर करता है।अन्यथा, अधिक जनसंख्या की समस्या हमारे अस्तित्व के लिए ख़तरा बन जाएगी।इसलिए हमें ऐसे प्रश्नों को तर्कसंगत मानवीय निर्णय पर छोड़ना होगा।इसका तात्पर्य यह है कि धर्म नैतिक निर्णय और कार्य के लिए कोई ठोस आधार प्रदान नहीं कर सकता है।ऊपर दिए गए तर्कों के आधार पर, डाउनी और केली (1982) ने निष्कर्ष निकाला कि, "उचित नैतिकता का धर्म से कोई संबंध नहीं।यदि कोई संबंध है तो ऐसा नहीं है कि नैतिकता धार्मिक विश्वासों पर निर्भर है, इसकी अधिक संभावना है कि मनुष्य की धार्मिक मान्यताएँ नैतिक चेतना का परिणाम हैं"।इसलिए हमें नैतिकता के किसी भी प्रश्न की जांच धर्म से स्वतंत्र और उन आधारों पर करनी चाहिए जो इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य बनाते हैं|

2.5 नैतिकता का सिद्धांत

अब हम अच्छाई का वस्तुनिष्ठ सिद्धांत नामक लोकप्रिय सिद्धांत पर संक्षेप में चर्चा करेंगे।

2.5.1 अच्छाई का वस्तुनिष्ठ सिद्धांत

यदि नैतिकता को धर्म से नहीं जोड़ा जा सकता है तो सवाल उठता है कि हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि कोई विशेष कार्य नैतिक रूप से अच्छा है?पहले के सिद्धांतों में, नैतिक उपदेश

को वस्तुनिष्ठ रूप से वैध माना जाता था और इसलिए नैतिक ज्ञान या"अच्छे" के ज्ञान के बारे में बात करना समझदारी थी।इस सिद्धांत के अनुसार,नैतिकताका आधारनिश्चित एवं वस्तुनिष्ठ है।

यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो हमें इस धारणा की ओर ले जाता है कि नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति वह है जिसने कुछ विशेष नैतिक मूल्यों की सच्चाई को पहचान लिया है और वह स्थितियों/परिस्थितियों की परवाह किए बिना उन पर कार्य करता है।ऐसे मूल्य जैसे सत्य, अहिंसा, दूसरों को धोखा न देना, वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष होना, बड़ों का सम्मान करना आदि, मानवीय गुण हो सकते हैं।ऐसे सिद्धांत के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य होगाविद्यार्थियों में इन मूल्यों को स्थापित करने की दृष्टि से निर्देश देना।लेकिन नैतिकता का ऐसा दृष्टिकोण जाहिर तौर पर सत्तावादीहोगाऔर इसलिए यह धार्मिक नैतिकता से बहुत अलग नहीं है, जिसे हम पहले ही पुराना कहकर खारिज कर चुके हैं।दूसरा, क्या ऐसे गुणों में कोई भी वांछनीय और सभी परिस्थितियों में इस प्रकार अच्छा हो सकता है?हम पहले ही कह चुके हैं कि ऐसे गुण सभीस्थितियों में हमेशा वांछनीय नहीं होते हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी हैं कि हमें बच्चों का पालन-पोषण नैतिकता के वस्तुनिष्ठ सिद्धांत के अनुसार क्यों नहीं करना चाहिए।ऐसा ही एक कारण मनुष्य की स्वतंत्रतापर आधारित है।मनुष्य की वैचारिक स्वतंत्रता,उसकी अपनी आस्था के अधिकार से इनकार नहीं किया जा सकता।नैतिक स्वतंत्रता की अवधारणा में मनुष्य को एक सक्रिय एजेंट के रूप में, अपने भाग्य और अपने कार्यों एवं व्यवहार के लिए ज़िम्मेदार माना जाता है।स्वायत्तता की ऐसी अवधारणा के तहत, यदि मुझे स्वतंत्र रूप से कार्य करने या अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने का अधिकार है, तो उन्हीं कारणों से मुझे दूसरों की समान स्वतंत्रता का अतिक्रमण करने का कोई अधिकार नहीं है।और यह नैतिकता का आधार बनता है, जो समता या न्याय का सार है।तात्पर्य यह है कि मनुष्य के मूल्य उसके अपने होने चाहिए।बाहर से थोपे गए मूल्यों के अनुसार व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता खो देता है।

अत: यह स्पष्ट है कि हमारा प्रश्न "नैतिकता क्या है" का उत्तर है, एक स्वतंत्र और स्वायत्त प्राणी के रूप में मनुष्य के अनुकूल समाज की लगातार बदलती माँगें।हमें इसे व्यक्तियों की स्वायत्तता की मांग एवं दूसरों की सम्मानजनक स्वतंत्रता और स्वायत्तता के रूप में पहचानना चाहिए।अगर हम मानते हैंहमें स्वतंत्र और स्वायत्त व्यक्तियों वाले समाज में रहना चाहिए, इस प्रकार हमें नैतिक शिक्षा की बढ़ती आवश्यकता भी महसूस होती है, एक ऐसी शिक्षा जो छात्रों को बाहरी रूप से थोपे गए नैतिक नियमों के अनुरूप होने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाय, उन्हें अपनी नैतिक सोच बनाने में सक्षम बनाए।

बोध प्रश्न 1

i) नैतिक चेतना क्या है?

.....

.....

ii) नैतिक शिक्षा और धार्मिक शिक्षा में क्या अंतर है?

.....

.....

2.5.2 नैतिकता की भाषा

नैतिकता के क्षेत्र में दार्शनिक और अन्य विचारक सबसे बुनियादी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास कर रहे हैं - यह प्रश्न कि सर्वोच्च अच्छा क्या है: सारांश, जिसे अपने आप में अच्छा कहा जा सकता है, या नैतिक प्रणाली का निर्धारण सिद्धांत।वास्तव में, इस प्रश्न का उत्तर जिस प्रकार दिया गया है, उसमें नैतिकता के विभिन्न सिद्धांत सामने आए हैं।उदाहरण के लिए, वस्तुनिष्ठवादियों के अनुसार,कुछ ऐसे कार्य हैंजो अपने आप में अच्छे हैं।इस धारणा का अनुसरण करने वाले आदर्शवादी विचारक, सत्य', 'अच्छाई' और 'सौंदर्य' जैसी अवधारणाओं को आंतरिक मूल्य प्रदान करते हैं।उनके अनुसार, ये मूल्य निरपेक्ष हैं और इसलिए इनका बिना शर्त पालन किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर व्यक्तिवादी,मूल्यों के वस्तुनिष्ठ सिद्धांत को अस्वीकार करते हुए इस बात पर जोर देते हैं कि इस दुनिया में शर्तों के बिना कुछ भी अच्छा नहीं है। जिसे हम अच्छा कहते हैं वह वस्तु, स्थिति या क्रिया का गुण नहीं है, बल्कि देखनेवाले की व्यक्तिपरक धारणा है। मेरे लिए कुछ अच्छा दूसरों के लिए बुरा हो सकता है; यह किसी विशेष स्थिति में या किसी विशेष समय में अच्छा हो सकता है लेकिन अन्य स्थितियों में या अन्य समय में बुरा हो सकता है।उनके अनुसार, कोई असीमित या पूर्ण अच्छाई नहीं है।उपयोगितावादी, व्यक्तिवादी से थोड़ा अलग दृष्टिकोण अपनाते हुए यह मानते हैं कि सही या अच्छा कार्य वह है जो संभवतः दुनिया में बड़े पैमाने पर सबसे अधिक प्रसन्नता पैदा करेगा| उनके लिए, प्रसन्नता वह है जो अपने आप में अच्छी है।अस्तित्ववादी विचारकों के लिए, "इच्छा" की स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता से अंतर्निहित अच्छाई का निर्माण होता है।कोई भी कार्य या स्थिति उस हद तक अच्छी होती है, जहां तक वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति(व्यक्तियों) की स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बढ़ावा देती है या बढ़ावा देने की संभावना होती है।

मूल प्रश्न जो पूछा जाता है वह यह है कि क्या स्वतंत्रता/स्वायत्तता, प्रसन्नता, सत्य, सौंदर्य या अच्छाई आदि हमेशा सभी परिस्थितियों में अच्छे होते हैं?थोड़ा विचार करने पर पता चलेगा कि ऐसी कोई भी चीज़ बिना शर्त अच्छी नहीं होती।महान दार्शनिक कांट ने "अच्छा" के ऐसे सभी सिद्धांतों की आलोचनात्मक जांच करते हुए अपनी एक स्पष्ट अनिवार्यता में कहा कि, "इस दुनिया में या इसके बाहर अच्छी इच्छा को छोड़कर, कुछ भीशर्तों के बिना अच्छा नहीं है"। इसलिए, कांट के लिए सद्भावना ही परम अच्छाई है।

यदि हम नैतिकता के इस मूलभूत प्रश्न का गहराई से विश्लेषण करेंतो हमने पाया कि किसी मूल्य पदार्थ की खोज में सार्वभौमिक सिद्धांतों को स्थापित करने में हमें जो कठिनाइयाँ आती हैं, वेरूप और सामग्री, भाषा और साहित्यया नैतिक आचरण के तरीके और मामले के बीच अंतर समझने में हमारी बुनियादी उलझन के कारण उत्पन्न होती हैं।किसी भी नैतिक आचरण का स्वरूप तथा विषय-वस्तु दोनों होते हैं।डाउनी और केली (1982) के अनुसार किसी कार्रवाई के नैतिक मूल्य को परिभाषित करने में हमारी गलती यह है कि हम अंतर्निहित वस्तु का संज्ञान लेते हैं, न कि उसके स्वरूप का-वह कारण जो किसी विशेष कार्य की ओर ले जाता है।पीटर्स (1966) के अनुसार, नैतिक व्यवहार के सिद्धांत इस प्रकार हैं: निष्पक्षता, दूसरों के हितों का विचार, स्वतंत्रता, व्यक्तियों के प्रति सम्मान एवं संभवतः सच बोलना। किंतु वही मौलिकप्रश्न फिर से पूछा जा सकता है: "क्या मानव आचरण के ऐसे सिद्धांत सभी परिस्थितियों में अच्छे हैं"?इसलिए पीटर्स का दृष्टिकोण उस दृष्टिकोण से भिन्न नहीं है जिसे कोह्लबर्ग ने नैतिक व्यवहार के लिए "गुणों का एक थैला दृष्टिकोण" कहा था।सभी गुण, अंतिम विश्लेषण

में, नैतिकता के पदार्थ या सामग्री का गठन करते हैं, न कि इसके तरीके या रूप का।

2.6 नैतिकता का स्वरूप

यदि सभी गुण नैतिकता का विषय या सामग्री बनाते हैं, तो इसका स्वरूप क्या है?कुछ दार्शनिक, विशेष रूप से प्रत्यक्षवादी मानते हैं कि व्यवहार की तर्कसंगतता और तर्कशक्ति नैतिक कार्रवाई पर नैतिक प्रवचन का रूप बनाती है।तदनुसार, किसी भी परिस्थिति में कोई भी व्यवहार अच्छा नहीं कहा जा सकता है यदि वह उसपरिस्थिति में तर्कसंगत या उचित नहीं है, भले ही वह बोधगम्य उच्चतम गुण के अनुरूप हो।इसके विपरीत कोई भी व्यवहार या क्रिया दी गई परिस्थितियों में तर्कसंगत है (किसी बड़े मानवीय उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रभावी), भले ही जिसे हम मानवीय बुराइयां कहते हैं (जैसे झूठ बोलना) उस उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है, वह निश्चित रूप से अच्छा होगा। यानी अगर "अंत" सार्थक है या पीछा करने योग्य है, तो "साधन" ज्यादा मायने नहीं रखते।ऐसी तार्किकता के आधार पर ही कोई यह उचित ठहरा सकता है कि रामायण में श्री राम या महाभारत में श्री कृष्ण को ग़लत तरीके क्यों अपनाने पड़े, क्योंकि सार्थक "अंत ख़तरे में पड़ सकता था और बहुत सारी बुराई उत्पन्न हो सकती थी।"अतः यह क्रिया की तर्कसंगतता (उसका स्वरूप) है न कि स्वयं क्रिया(इसकी सामग्री) जो किसी कार्य का नैतिक मूल्य निर्धारित करती है।

2.7 तर्कसंगत व्यवहार के मानदंड

नैतिक मानव आचरण पर इसके निहितार्थ के साथ पूर्ण परिप्रेक्ष्य में तर्कसंगतता या तार्किकता को समझने के लिए आइए हम तर्कसंगतता की अवधारणा की व्याख्या करें।

तर्कसंगतता की हेगेलियन द्वंद्वात्मकता की चर्चा चार मानदंडों के आधार पर की जाती है, जो निम्नलिखित हैं:

i) तार्किक स्थिरता या सुसंगति

ii) सार्वभौमिकोंकीपीढ़ी

iii) सामान्यीकरण के समर्थन में अनुभवजन्य साक्ष्य या इसका समर्थन करने के लिए अच्छे कारण

iv) सार्वजनिकस्पष्टता

पहली कसौटी के अनुसार यह आवश्यक है कि हमारी नैतिक मान्यताओं का जो समुच्चय है, वह आन्तरिक रूप से सुसंगत हो।उदाहरण के लिए, अगर मैं दूसरों का सम्मान नहीं करता और साथ ही यह स्वीकार नहीं करता कि मुझे दूसरों का सम्मान करना चाहिए ऐसी परिस्थिति में मेरे लिए यह मानना तर्कसंगत नहीं है कि दूसरों को मेरे साथ सहयोग करना चाहिए या मेरे हितों का ख्याल रखना चाहिए।वहीं दूसरी ओर,यह उतना ही तर्कसंगत (या सुसंगत) होगा यदि मैं मानता हूं कि दूसरों को मेरे हितों का सम्मान करने की आवश्यकता नहीं है, जैसे मैं उनके हितों का सम्मान नहीं करता हूं।इस दुनिया में बहुत से लोग बाद वाले सिद्धांत के अनुसार जिंदगी जीते हैं;हो सकता है कि हमें उनके मूल्य (सामग्री) पसंद न हों, लेकिन हम उन्हें तर्कसंगत या तर्कहीन नहीं कह सकते, क्योंकि उनमें व्यवहार की सुसंगतता या स्थिरता दिखती है|तर्कसंगत कहलाने के लिए, व्यवहार सुसंगत और तर्कयुक्त होना चाहिए।

तर्कसंगत व्यवहार की दूसरी कसौटी/शर्त विश्वव्यापी सिद्धांतों की उत्पत्ति है।इस शर्त के अनुसार, किसी को आज एक सिद्धांत और कल दूसरे सिद्धांत द्वारा निर्देशित नहीं होना चाहिए जब तक कि इसके लिए ठोस कारण न हों।तर्कसंगत नैतिकता के विचार में यह शामिल है कि मनुष्य का व्यवहार कुछ सामान्य सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए, चाहे ये सिद्धांत कुछ भी हों।

तर्कसंगतता की तीसरी शर्त के अनुसार, हम जो करते हैं उसके लिए आनुभविक साक्ष्य या अच्छे कारण प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए।हम कह सकते हैं कि वह व्यवहारपूर्ण अर्थों में तर्कहीन है जिसके लिए कोई वैध कारण नहीं दिया जा सकता| ऐसे व्यवहार को नैतिक नहीं माना जा सकता।

चौथी शर्त के अनुसार, वास्तव में तर्कसंगत होने के लिए हमारा व्यवहारसार्वजनिक रूप से समझने योग्य या स्वीकार्यहोना चाहिए।दूसरी ओर, यदि हम अस्वाभाविकसाक्ष्य या कारण पर आधारित व्यवहार करते हैं तो उन्हें तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता।ऐसे व्यवहार का एक उदाहरण "युक्तिकरण" हो सकता है जो तर्कसंगतता के साथविरोधाभासी है| युक्तिकरणमें, व्यक्ति साक्ष्य या कारणों के चयनात्मक उपयोग द्वारा अपने व्यवहार को उचित ठहराने का प्रयास करता है,जो वैध प्रतीत होते हैं लेकिन सत्य कारणनहीं हैं| कहावत "अंगूर खट्टे हैं" (किसी चीज़ को इसलिए बुरा मानना कि उसे प्राप्त नहीं किया जा सका) व्यवहार को तर्कसंगत बनाने का एक उदाहरण है।दूसरी ओर, तर्कसंगतता वस्तुनिष्ठ रूप से दिए गए कारणों पर आधारित है और किसी की धारणाओं से प्रभावित नहीं होती है|

अंतिम विश्लेषण में हालांकि तर्कसंगतता हमें नैतिक सिद्धांतों का कोई समुच्चय जिसे हम अपना सकें या उस पर कार्य कर सकें, प्रदान नहीं कर सकता है, फिर भी यह हमें हमारे नैतिक संहिता के स्वरूप या तरीके के बारे में काफी कुछ बता सकता है(नैतिक संहिता के रूप, ढंग या भाषा से क्या तात्पर्य है, यह स्पष्ट किया जा सकता है)।यानि इसका मतलब है कि तर्कसंगत होने के लिए हमारा आचार - नीति संहिता,सामान्य सिद्धांतों के रूप में(सामान्यीकरण)साक्ष्य के अधीन सुसंगत/तर्कयुक्त होना चाहिए, जो 'अच्छे' की सार्वजनिक समझ से उभरता है।

बोध प्रश्न 2

i) अच्छाई का वस्तुनिष्ठ सिद्धांत क्या है?

……

……

……

ii) व्यवहार की तर्कसंगतता क्या है?

……

……

……

iii) युक्तिकरण और तार्किकता के बीच क्या अंतर है?

……

.....

.....

iv) हेगेल की तर्कसंगतता की द्वंद्वाद के चार मानदंडों का वर्णन करें

.....

.....

.....

2.8 नैतिक निर्देश, नैतिक प्रशिक्षण बनाम नैतिक शिक्षा के बीच अंतर

मतभेदों को बेहतर तरीक़े से सामने लाने के लिए कुछ उदाहरण जोड़े जा सकते हैं।हमने देखा है कि नैतिक शिक्षा कुछ नैतिक सिद्धांतों की शिक्षा का विषय नहीं है, न ही यह उद्देश्यपूर्ण, निश्चित और अपरिवर्तनीय नैतिक मूल्यों को जानने का मामला है।बल्कि यह नैतिक मुद्दों पर स्वयं सोचना सीखने, नैतिक रूप से स्वायत्त बनने की एक प्रक्रिया है|शिक्षण के कार्य का वर्णन करते समय, हम निर्देश, प्रशिक्षण, कंडीशनिंग या यहां तक कि उपदेश और कभी-कभी शिक्षा जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं।

हालाँकि, हमलोगों को यह याद रखना चाहिए कि इनमें से प्रत्येक पद का एक निश्चित और एक विशिष्ट अर्थहै|इनका एक दुसरे के स्थान पर उपयोग नहीं किया जा सकता। इन शब्दों के अंतर को समझने के लिए आइए उन परिस्थितियों के बारे में विचार करें जहां इनका उचित उपयोग किया जाता है।पीटर्स (1966) के अनुसार शिक्षा का संबंध व्यक्ति की स्वायत्तता विकसित करने से है जिससे कि लोग स्वयं सोच और चयन कर सकें।शिक्षामें संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य का विकास भी शामिल है।

अन्य प्रक्रियाओं जैसे प्रशिक्षण या निर्देश आदि का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं है।किसी को विशेष कौशल (जैसेकिगाड़ी चलाना) में प्रशिक्षित करते समय हम व्यक्ति की स्वायत्तता के बारे में कोई विचार नहीं करते हैं। अनुकूलन और सिद्धांतीकरण की प्रक्रिया व्यक्तिगत स्वायत्तता के लिए अभी भी अधिक अप्रासंगिक है|इन प्रक्रियाओं में जानबूझकर व्यक्ति की स्वायत्तता का गला घोंटने का प्रयास किया जाता है।लोगों को किसी धार्मिक विचारधारा या राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्थाओं में दीक्षित करने का प्रयास जानबूझ कर की गयी प्रक्रिया है और इसका उद्देश्य लोगों को इन प्रणालियों की वैधता पर सवाल उठाने से रोकना है।

हालाँकि, शिक्षा की प्रक्रिया में, जो महत्वपूर्ण है वह है विकास,ज्ञान और समझ - एक प्रकार का संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य और आलोचनात्मक जागरूकता का विकास भी।इसलिए, शिक्षित होने का अर्थ केवल स्वायत्तता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उस स्वायत्तता का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता भी है। केवल विचार की स्वतंत्रता प्रदान करने से कोई व्यक्ति शिक्षित होने के योग्य नहीं हो जाता यदि उसको विषय की पर्याप्त जानकारी न हो।अतः शिक्षा का तात्पर्य न केवल विद्यार्थियों में अपनी राय बनाने की क्षमता विकसित करना,बल्कि इन राय की गुणवत्ता में सुधार करने का प्रयास करना भी है|हमें बहुत अच्छी तरह मालूम हैकि हम किसी व्यक्ति की राय पर उचित संज्ञान नहीं देते हैं जब तक कि हम आश्वस्त न हों कि उसने मामले पर उचित विचार किया है और जानता है कि वह किस बारे में बात कर रहा है।

शिक्षा की एक अन्य विशेषता की ओर पीटर्स (1966) हमारा ध्यान आकर्षित करता है कि वे जिन गतिविधियों में लगे हुए हैं, वे उनके स्वयं के लिए अपनाए जाने योग्य हैंजबकि प्रशिक्षण निर्देश या उपदेश जैसी अन्य गतिविधियों के मामले मेंयह आवश्यक नहीं है।उदाहरण के लिए, हम किसी व्यक्ति को कुछ कौशल निष्पादित करने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं, बिना इस सवाल के कि वह उन्हें महत्व देता है या नहीं।उदाहरण के लिए, कोई किसी को जेब काटने या चोरी करने या यहां तक कि किसी को प्रताड़ित करने जैसे कौशल में प्रशिक्षित कर सकता है। इसी प्रकार कोई किसी को हठधर्मिता, मान्यताओं आदि को स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिसकी कोई भी तर्कसंगत दिमाग सराहना नहीं कर सकता है। दूसरी ओर, किसी व्यक्ति के शिक्षित होने की बात करना और यह दावा करना कि वह उस ज्ञान और समझ को कोई महत्व नहीं देता है जो उसने शिक्षित होने के दौरान अर्जित किया है, अतार्किक है।नैतिक शिक्षा में अभी एक और भी महत्वपूर्ण तत्व है, जिसका संबंध उचित मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं, दूसरों के लिए भावना आदि के के विकास से है।यदि हम अन्य लोगों के संबंधों पर विचार नहीं करते हैं तो हम नैतिक निर्णयों में कुछ बहुत महत्वपूर्ण चूक जाते हैं।इसलिए वस्तुनिष्ठता पर आधारित तर्कसंगतता मानवीय संबंधों को अलग नहीं करती।

2.9 नैतिक निर्णय और उनके मानदंड

नैतिकता और नैतिक शिक्षा की प्रकृति की जांच करने के बाद,हमें एक महत्वपूर्ण प्रश्न की जांच करने की आवश्यकता है कि नैतिक कार्य क्या है। इसके दो पहलू हैं: एक, किसी कार्य को तब तक नैतिक या गैर-नैतिक नहीं कहा जा सकता जब तक यह सिद्ध नहीं हो जाता कि व्यक्ति ने अपनी "स्वतंत्र इच्छा" से ऐसा कार्य किया है। यह एक ऐसा कार्य होना चाहिए जिसके लिए पूर्ण अर्थों में स्वयं व्यक्ति ही उत्तरदायी हो।दूसरी ओर, यदि व्यक्ति को उसके नियंत्रण से परे शक्तियों द्वारा ऐसा करने के लिए विवश किया जाता है-और यदि इसे उसकी स्वतंत्र इच्छा पर छोड़ दिया गया होतातो संभवतः वह इसे नहीं करता, ऐसे मामले में व्यक्ति को इस कृत्य के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। ऐसी स्थिति में यह कृत्य नैतिक या अनैतिक नहीं कहा जायेगा।

यह हमारे विचार के दूसरे छोर की ओर ले जाता है।जब किए गए कुछ कार्यों के लिए प्रशंसा या दोष का प्रश्न आता है, तो जांच की जाती है, हमें वह आशय या उद्देश्य देखने की आवश्यकता है जिसके प्रभाव में कारक द्वारा कार्य किया जाता है। इस संबंध में दो और मुद्दों पर विचार करने की आवश्यकता है: (a) क्या प्रतिनिधि ने कार्य इसलिए किया क्योंकि उसे लगा कि यह सही है? या (b) क्या उसने प्रदर्शन इसलिए किया क्योंकि इससे उसे लाभ हो सकता था? वास्तव में कारक द्वारा किए गए किसी कार्य के बारे में नैतिक निर्णय लेते समय, कार्य स्वयं उतनामहत्वपूर्ण नहीं होता जितना कि "इच्छा" जिसके साथ कार्य किया जाता है। कांट का अभिप्राय संभवतः बिल्कुल यही था जब उन्होंने कहा: सद्भावना को छोड़कर इस दुनिया में या इसके बाहर कुछ भी शर्तों के बिना अच्छा नहीं है। यदि कोई कार्य "सद्भावना" से किया जाता है, तो उसे अच्छा माना जाएगा, भले ही उस कार्य के परिणाम कुछ भी हों। किसी भी अदालत में "सद्भावना" और "स्वतंत्र इच्छा" के इन दो सिद्धांतों को यह निर्धारित करने के लिए भी एकमात्र मानदंड माना जाता है कि कोई व्यक्ति आपराधिक रूप से दोषी है या नहीं। न्यायाधीश यह सुनिश्चित करना चाहता है कि क्या यह कार्य बिना किसी दबाव के, उसकी अपनी इच्छा से किया गया था और यह कृत्य किस उद्देश्य/आशय से किया गया था। दबाव में किए गए किसी

भी कार्य के लिए,कर्ता को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता और इसलिए उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इसी प्रकार,यदि उद्देश्य अच्छा साबित हुआ है, किंतु उसके कार्य के परिणाम कुछ हद तक किसी के लिए हानिकारक हैं, तो कारक आपराधिक रूप से दोषी नहीं होगा। कांट इस बात को स्पष्ट करता है जिसे वह "कर्तव्य के लिए किया गया कार्य" और "कर्तव्य के अनुसार किया गया कार्य" कहता है। नैतिक अच्छाई को केवल पहले वाले की नियति हो सकती है लेकिन बाद वाले की नहीं।

ऐसा ही एक उदाहरण एक विशेषज्ञ नेत्र रोग विशेषज्ञ (एक नेत्र सर्जन) का हो सकता है, जो उन गरीब लोगों के लाभ के लिए जो अस्पताल का खर्च वहन नहीं कर सकते एक मुफ़्त नेत्र-ऑपरेशन शिविर आयोजित करने के लिए एक समाचार पत्र में विज्ञापन देता है: ज़ाहिर है ऐसे निःशुल्क ऑपरेशन शिविर से कई ग़रीब लोगों को लाभ मिलेगा| फिर भीनि:शुल्क शिविर आयोजित करने का नैतिक मूल्य सर्जन के इरादे पर निर्भर करेगा। कुछ लोग इसे अपने विज्ञापन के लिए, जनता के बीच पहचान बनाने के लिए करते हैं ताकि इससे उन्हें अपने व्यवसाय को चमकाने में मदद मिल सके और उनका लाभ हो। उनके लिए ऐसे कैंप चारे का काम करते हैं| महत्वपूर्ण नैतिक व्यवहार यह है कि यह नैतिक या सामाजिक रूप से वांछनीय कार्य करने की इच्छा से प्रेरित होना चाहिए, न कि सुविधा के लिए। कर्तव्य के लिए किया गया कार्य बिना शर्त अच्छा होता है, जबकि केवल कर्तव्य के अनुरूप किये गये कार्य का कोई नैतिक मूल्य नहीं होता।

2.10 सारांश

इकाई का आरंभिक भाग, मनुष्य में नैतिक चेतना, सही-गलत की मानवीय भावना और दूसरों की देखभाल करने से संबंधित है। नैतिकता एवं नैतिक शिक्षा के स्वरूप की व्याख्या करते हुए इसे धार्मिक शिक्षा से अलग करने का प्रयास किया गया है।चूँकि धार्मिक शिक्षा सत्तावादी है, इसलिए यह वास्तव में शिक्षात्मक नहीं हो सकती क्योंकि शिक्षा अपने स्वभाव से ही व्यक्ति को स्वयं सोचने में सक्षम बनाती है।नैतिकता की प्रकृति एवं अवधारणा के बारे में हमारी चर्चा में हमने वस्तुनिष्ठ सिद्धांत के संबंध में बताया, जिसके अनुसार नैतिकता का आधार निश्चित एवं अपरिवर्तनीय है। किंतु व्यवहारिक रूप से नैतिकता के संदर्भ में हम देखते हैं कि, हम बदलती परिस्थितियों, उद्देश्यों एवं उस संदर्भ का संज्ञान लेते हैं जिसमें हम स्वयं को पाते हैं।

अत: इसकी प्रकृति निश्चित नहीं की जा सकती। दूसरे वस्तुनिष्ठ सिद्धांत व्यक्ति की स्वायत्तता की अवधारणा के विरुद्ध है। आगे बताया गया है कि, कोई भी मूल्य सामग्री सभी परिस्थितियों में बिना शर्त अच्छी नहीं हो सकती है। अर्थात् कोई संपूर्ण या परम अच्छा नहीं हो सकता। नैतिक व्यवहार के 'रूप' और 'सामग्री' के बीच अंतर की व्याख्या करने से नैतिकता का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है| हमारे नैतिक व्यवहार का रूप भी होना चाहिए और विषयवस्तु भी।

उदाहरण के लिए, जब हम ऐसा कहते हैंकिसी भी व्यवहार को नैतिक रूप से अच्छा होने के लिए उसे तर्कसंगत होना चाहिए, यहां व्यवहार की तर्कसंगतता उसका स्वरूप का निर्मित करती है और वास्तविक कार्य उसकी सामग्री का निर्माण करता है।इस इकाई में हेगेल द्वारा प्रतिपादित तर्कसंगतता के विभिन्न मानदंडों को चित्रित किया गया है। यह इकाई प्रत्येक मामले में उपयुक्त उदाहरण देकर नैतिक शिक्षा, नैतिक प्रशिक्षण और नैतिक शिक्षा के बीच अंतर पर भी चर्चा करती है। अंत में, यह प्रश्न उठता है कि नैतिकता क्या है,जिसकी जांच नहीं की गई है|

इस संबंध में, नैतिक निर्णय के दो बहुत महत्वपूर्ण मानदंडों का वर्णन किया गया है अर्थात् उद्देश्य जिसके साथ कोई भी कार्य किया जाता है और "स्वतंत्र इच्छा"। निष्कर्षतः, कर्ता की स्वतंत्र इच्छा के बिना कोई कार्य नहीं किया जाता,इसे नैतिक या अनैतिक कहा जा सकता है; और दूसरा, सद्भावना के साथ किया गया कोई भी कार्य नैतिक अच्छाई का गठन करता है, चाहे नतीजे कुछ भी हो।इस संबंध में दो प्रकार के कृत्यों की संक्षेप में व्याख्या की गई है: एक जो कर्तव्य के लिए किया जाता है और दूसरा जो कर्तव्य के अनुसार किया जाता है।

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) यह एक प्राकृतिक विन्यास है जिसके लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है या मानव व्यक्तित्व में इसके पूर्ण विकास के लिए शिक्षा।इसका संबंधसामाजिक संरक्षण से है। यदि हम दूसरों के हितों, अनुभव या भावनाओं का उसी तरह ख्याल रखते हैं जैसे हम अपने हितों, भावनाओं का रखते हैं तो हम नैतिक रूप से जागरूक हैं।

ii) a) धर्म के बिना जीना संभव है लेकिन नैतिक मूल्यों के बिना जीना अकल्पनीय है। b) धर्म से प्राप्त नैतिकता चरित्र में आधिकारिक है क्योंकि यह उन धर्मग्रंथों से निकली है जो दृढ़ हैं। c) नैतिकताधार्मिक विश्वासों पर निर्भर नहीं है; यह संभावना है कि किसी व्यक्ति की धार्मिक मान्यताएँ नैतिक चेतना का परिणाम हैं।

बोध प्रश्न 2

i) इस सिद्धांत के अनुसार नैतिकता का आधार निश्चित एवं वस्तुनिष्ठ है। इसका विचार है कि एक नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति वह है जिसने कुछ विशेष नैतिक मूल्यों की सच्चाई को पहचाना है और वह स्थितियों/परिस्थितियों की परवाह किए बिना उन पर कार्य करता है।

ऐसे मूल्य निरपेक्ष हो सकते हैं और इसलिए सच्चाई, विनम्रता, बड़ों के प्रति सम्मान आदि जैसे मानवीय गुणों का बिना शर्त पालन किया जा सकता है।

ii) प्रत्यक्षवादियों जैसे कुछ दार्शनिकों का मानना है कि व्यवहार की तर्कसंगतता नैतिक कार्रवाई का रूप है।तदनुसार, किसी भी परिस्थिति में कोई भी व्यवहार अच्छा नहीं कहा जा सकता यदि वह तर्कसंगत नहीं है, भले ही वह बोधगम्य उच्चतम गुण के अनुरूप हो।

iii) युक्तिकरण में, व्यक्ति साक्ष्य या कारणों के चयनात्मक उपयोग द्वारा अपने व्यवहार को उचित ठहराने की कोशिश करता है जो वैध लगते हैं लेकिन सच्चे कारण नहीं होते हैं।

दूसरी ओर, तर्कसंगतता वस्तुनिष्ठ रूप से दिए गए कारणों पर आधारित है और किसी की धारणा से प्रभावित नहीं होती है|

iv) हेगेल की तर्कसंगतता की द्वंद्वात्मकता के चार मानदंड हैं: a) तार्किक स्थिरता या सुसंगतता b) सार्वभौमिकों की पीढ़ी c) अनुभवजन्य साक्ष्य एवं d) सार्वजनिक सुगमता।

2.12 सन्दर्भ

अयेर, ए.जे. (1946), लैंग्वेज टीएमथ एंड लॉजिक इन डाउनी; जे.बी. और केली, ए.बी. (1982), मोरल एजुकेशन, लंदन: हार्पर एंड रो।

बैर, के. (1975). डाउनी, जे.बी. और में शिक्षा के उद्देश्य के रूप में नैतिक स्वायत्तता

केली, ए.बी. (1982), मोरल एजुकेशन, लंदन: हार्पर एंड रो।

डागर बी.एस. और ढुल, इंदिरा (1995)। नैतिक शिक्षा में परिप्रेक्ष्य, नया

दिल्ली: उप्पल पब्लिशिंग हाउस।

डाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी. (1982)। नैतिक शिक्षा, लंदन: हार्पर और

पंक्ति।

हरे, आर.एम. (1974). स्वतंत्रता और कारण, ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

कोहलबर्ग, एल. (1964) स्कूलों में नैतिक शिक्षा, स्कूल शिक्षा जर्नल।

के, डब्ल्यू. (1975) मोरल एजुकेशन, लंदन: एलन और अनविन।

पीटर्स, आर.एस. (1966) नैतिकता और शिक्षा, लंदन: एलन और अनविन।

पीटर्स, आर.एस. (1973) कारण और करुणा, लंदन: रूटलेज।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 नैतिकता के आयाम

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति कौन है?

3.4 नैतिकता एवं आचार नीति के बीच अंतर

3.5 नैतिकता के विभिन्न पहलू

3.5.1 देखभाल

3.5.2 आंकना

3.5.3 नैतिकता और न्याय

3.5.4 कार्य (अभिनय)

3.6 सारांश

3.7 बोध प्रश्नकेउत्तर

3.8 सन्दर्भ

3.1 प्रस्तावना

वह सामाजिक कुरीति जिससे सामान्यतः मानव समाज एवं विशेष रूप से भारतीय समाज पीड़ित है उसका वर्णन करने के बादहमने इसे परिभाषित करने एवं इस खंड की पिछली इकाई में नैतिकता और नैतिक शिक्षा की प्रकृति की चर्चा करने का प्रयास किया है।हमने यह चर्चा की कि किसी व्यक्ति का नैतिक व्यवहार केवल सच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता आदि जैसे मानवीय गुणों पर निर्भर नहीं करता है।हमने चर्चा की कि किसी व्यक्ति का नैतिक व्यवहार केवलसच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता आदि जैसे मानवीय गुणों पर निर्भर नहीं करता है।यह उन उद्देश्यों और इरादों पर भी निर्भर करता है जिनके प्रभाव में मनुष्य कार्य करता है।इसलिए नैतिकता एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें कई पहलू या आयाम शामिल हैं।

किसी भी अन्य व्यवहार की तरहनैतिक व्यवहार भी व्यक्तित्व के कुछ क्षेत्रों, विशेष रूप से संज्ञानात्मक और भावनात्मक क्षेत्रों से संबंधित है। इस इकाई में हम नैतिक व्यवहार के विभिन्न आयामों की व्याख्या करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बादआप:

- नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- नैतिकता के तीन पहलुओं पर चर्चा कर सकेंगे;
- नैतिकता एवं सदाचार के बीच अंतर कर सकेंगे;

- नैतिकता में गिलिगन के योगदान-देखभाल के आयामका वर्णन कर सकेंगे;
- न्याय की नैतिकता एवं देखभाल की नैतिकता के बीच अंतर कर सकेंगे;
- न्याय की नीति एवं देखभाल की नीति के बीच अंतर कर सकेंगे;
- स्पष्ट करेंगे कि अनुयोजन/कार्य स्वयं नैतिक रूप से तटस्थ होते हुए भी नैतिक व्यवहार में महत्वपूर्ण क्यों है;
- स्पष्ट करेंगे कि कुछ प्रकार के व्यवहारों में, विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में, आदत निर्माण में प्रशिक्षण क्यों आवश्यक है

3.3 नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति कौन है?

यदि हम इस बात पर थोड़ा विचार करें कि हम नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति किसे कह सकते हैं, तो नैतिकता के आयामों के बारे में समझ आसान हो सकती है।पिछली इकाई में शिक्षा के अर्थ का विश्लेषण करते समयहमने देखा कि शिक्षित होने की एक अनिवार्य शर्त नैतिक चेतना है;दूसरे, नैतिक शिक्षा के अर्थ पर हमारी चर्चा में, हमने इसे नैतिक शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण से अलग किया।इसके आधार पर हम यह मान सकते हैं कि हम उस व्यक्ति को नैतिक रूप से शिक्षित नहीं कहना चाहेंगेजिसकी नैतिक परवरिश इस प्रकार हुई है, जो 'क्यों विश्वास करें' के बजाय 'क्या विश्वास करें' के बारे में है।कोहलबर्ग ने कहा है कि नैतिक पालन-पोषण के लिए "गुणों का थैला" किसी व्यक्ति को नैतिक रूप से शिक्षित नहीं बनाता है।इस दृष्टिकोण के अनुसार नैतिकता में कुछ निश्चित और अपरिवर्तनीय मूल्य शामिल हैं जिन्हें बच्चों में पुरस्कार और दंड के माध्यम से स्थापित किया जाना है।इस प्रकार बड़े किये गये बच्चों को नैतिक शिक्षा के बजाय केवल चरित्र प्रशिक्षण दिया जाता है।सही मायने में नैतिक शिक्षा में कई अन्य पहलू भी शामिल हैं।

प्रथम, एक व्यक्ति जो किसी विशेष स्थिति, अर्थात संदर्भ पर उचित विचार किए बिना अपने स्वायत्त नैतिक निर्णयों तक पहुंचने में सक्षम नहीं है,उसे नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता।हमें यह समझना चाहिए कि हमारा नैतिक कार्य हमेशा स्थिति पर निर्भर होता है और हमें सिखाया गया है कि हमें 'गुणों' के अनुसार कार्रवाई के कुछ निश्चित तरीकों का अंधाधुंध पालन नहीं करना चाहिए।उदाहरण के लिए, यदि कोई डॉक्टर किसी मरीज़ से सच बोलता है कि वह किसी ऐसी बीमारी से पीड़ित है जिसका इलाजमुश्किल है', तो उसका कार्य नैतिक कार्य नहीं होगा।

द्वितीय, नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति के सकारात्मक चरित्र-चित्रण के संबंध मेंहम कह सकते हैं कि ऐसे व्यक्ति के पास संदर्भ से संबंधित पर्याप्त तथ्यात्मक ज्ञान होना चाहिए। अयेर (1946) इस पहलू को मामले का "गैर-नैतिक" तथ्य कहते हैं।ऐसी जागरूकता की प्रासंगिकता यह नहीं है कि कोई तार्किक रूप से तथ्यात्मक आधारों से अंतिम विकल्पों/निर्णयों का अनुमान लगा सके,बल्कि यह व्यक्ति को स्थिति को आकार देने और कार्रवाई के कुछ वैकल्पिक तरीकों पर कार्य करने के संभावित सामाजिक-नैतिक परिणामों को समझने में सक्षम बनाता है।यदि शिक्षक किसी छात्र से कहता है कि उसकी बुद्धि कम है या डॉक्टर किसी मरीज़ से कहता है कि वह जिस बीमारी से पीड़ित है वह घातक है, तो अधिकांशतः मामलों में ऐसी सत्यता के परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।नैतिक रूप से ऐसे मामलों में सच छुपाना सच बोलने से कहीं अधिक

अच्छा है।

मामले के ग़ैर-नैतिक-तथ्यों के ज्ञान के अतिरिक्त, नैतिक विकल्पों को क्रियान्वित करने के लिए व्यक्ति के पास कुछ कौशल, विशेष रूप से सामाजिक कौशल होने चाहिए।उदाहरण के लिए, आपको यह समझने की आवश्यकता है कि लोगों से कैसे जुड़ें, उनके साथ कैसे मिलें और यहां तक कि उनके साथसंवाद भी करें।अतः, नैतिक रूप से शिक्षित व्यक्ति के पासदूसरों की भावनाओं का ज्ञान और समझ होना आवश्यक है| इसलिए, दूसरों के हितों, अधिकारों और भावनाओं के प्रति निर्देशित एक भावनात्मक दृष्टिकोण,बल्कि केवल संज्ञानात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है।

कभी-कभी हमारा नैतिक व्यवहार दूसरों के विचार से अधिक हमारी अपनी भावनाओं और संवेदनाओं से प्रभावित होता है।जब हम संज्ञानात्मक स्तर पर लिए गए निर्णय को क्रियान्वित करने आते हैं तो हम कई ताकतों द्वारा खींचे जाते हैं जिन्हें 'अरस्तू' ने 'सुख' कहा था, जो हमें वह करने से रोक सकते हैं जो हमें करना चाहिए; या हमारी तर्कसंगतता हमें क्या करने के लिए प्रेरित करती है।उदाहरण के लिए, मेरा दोस्त अस्पताल में भर्ती है, ऐसी स्थिति में मेरा कर्तव्य है कि मैं उसे देखने अस्पताल जाऊं।लेकिन कुछ भावनाओं के कारण मैं वहां जाना पसंद नहीं करता बल्कि आराम करते हुए समय बिताता हूं।नैतिक सन्दर्भ में तर्क और भावनाओं के बीच ऐसे टकराव सदैव बने रहते हैं।मोह, लोभ और स्वार्थ जैसी भावनाएँ,नैतिक रूप से अच्छे व्यवहार की प्रत्यक्ष विरोधी हैं।इस पाठ्यक्रम की बाद की इकाइयों में हम ऐसे संघर्षों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे। अब, यह इंगित करना पर्याप्त हैजैसाकि सेंट पीटर ने एक बार टिप्पणी की थी, बल्कि स्वीकार किया था कि "जो बुराई मैं नहीं करूंगा, वह मैं करूंगा और जो अच्छा मैं करूंगा, वह मैं नहीं करूंगा" (डाउनी और केली, 1982)।

वास्तव में, प्रकृति द्वारा हमें दो प्रकार की अनुभूतियाँ एवं भावनाएँ दी गई हैं: प्रथम,वे जो आत्म-संरक्षण की ओर ले जाती हैं जैसा कि ऊपर अनुच्छेद में दर्शाया गया है; एवं दूसरे, वे जो सामाजिक संरक्षण की ओर ले जाती हैं जैसे सहानुभूति, समानुभूति, प्रेम, दयालुता, दूसरों की देखभाल करना इत्यादि।हमें अपने परिपक्व नैतिक विकास मेंदो प्रकार की भावनाओं के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

फिर भी, इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि भावनाएं मनुष्य के नैतिक विकासमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं| उन्हें मानवीय दुर्बलता का एकमात्र अप्रिय उपाय नहीं माना जाना चाहिए।इसे नैतिकता के विकास में एक आवश्यक भूमिका निभाने के रूप में देखा जाना चाहिए।जैसा कि हम जानते हैं कि कंप्यूटर नैतिक रूप से कार्य नहीं कर सकते, क्योंकि उनमें भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने की क्षमता का अभाव है।वास्तव में, यही भावनात्मक पहलू है हमें मानवीय बनाता है और हमें नैतिक प्राणी के रूप में जीने में सक्षम बनाता है।

3.4 नैतिकता एवं आचार नीति के बीच अंतर

नैतिकता या दूसरे शब्दों में नैतिक मूल्य आम तौर पर मूल्यों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण से जुड़े होते हैं।व्यक्तिगत नैतिकताएं सेक्स, शराब पीने, जुआ इत्यादिसे संबंधित मान्यताओं को प्रतिबिंबित करती हैं।वे धर्म, संस्कृति, परिवार,मित्र आदि के प्रभाव को प्रतिबिंबित कर सकते हैं।दूसरी ओर नैतिकता का संबंध इस बात से है कि एक नैतिक व्यक्ति का व्यवहारकैसा होना चाहिए।नैतिक मूल्य वे मान्यताएँ हैं जो इस बात से संबंधित हैं कि क्या नैतिक रूप से सही और उचित है,

इसके विपरीत जो बिल्कुल सही या प्रभावी है, अर्थात, कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से यह मान सकता है कि शराब पीना अनैतिक है।हालाँकि, शराब पीना अपने आप में अनैतिक नहीं है। जबकि, अपने व्यक्तिगत नैतिक मूल्यों को दूसरे पर थोपना अनैतिक है।नैतिक मूल्य सांस्कृतिक, धार्मिक या जातीय मतभेदों से परे हैं।नैतिक मूल्य अधिक सार्वभौमिक वैश्विक दृष्टिकोण को अपनाते हैं।विश्वसनीयता, सम्मान, जिम्मेदारी,निष्पक्षता, देखभाल और नागरिकता कुछ महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य हैं।नैतिकता एवं सदाचार ऊपर से एक जैसे प्रतीत होते हैं, लेकिन गहराई से विश्लेषण करें तो सूक्ष्म अंतर नज़र आता है।इसका अर्थ है कि किसी के लिए मांस खाना नैतिक हो सकता हैऔर साथ ही उसी व्यक्ति को उसी समय किसी जानवर का वध करने का प्रतिकूल विचार भी आ सकता है।इसका तात्पर्य यह है कि नैतिकता उस संहिता को परिभाषित करती है जिसका एक समाज या लोगों का समूह पालन करता है, जबकि नैतिकता व्यक्तिगत और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर बहुत गहरे स्तर पर सही और गलत की पड़ताल करती है।उदाहरण के लिए, भारत में हिरण और बाघ जैसे जंगली जानवरों का शिकार करना कुछ समय पहले तक नैतिक था, क्योंकि इसके विरुद्ध कोई क़ानून नहीं था।लेकिन हालिया क़ानून ने इसे अवैध बनाकर इस पर प्रतिबंध लगा दिया है।नीति का पालन करना इस प्रकार अपेक्षाकृत सरल मामला हैलेकिन नैतिकता का पालन करना अपेक्षाकृत कठिन है।नैतिकता व्यक्तिगत चरित्र को परिभाषित करती है, जबकि नीति एक सामाजिक व्यवस्था पर जोर देती है जिसमें उन नैतिकताओं को लागू किया जाता है।

3.5 नैतिकता के विभिन्न पहलू

जैसा कि हमने ऊपर बताया है, नैतिकता एक बहुआयामी अवधारणा है।इस अवधारणा में कई मुद्दे और प्रसंग शामिल हैं। इसके विभिन्न पहलुओं की बेहतर और अधिक व्यापक समझ निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है:

हर्ष एवं अन्य (1979) स्लोटिन की कहानी का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए नैतिकता के तीन विशिष्ट आयामों या पहलुओं को प्रकट करते हैं:

स्लॉटिन एक परमाणु भौतिक विज्ञानी थे जो परमाणु बम के विकास पर प्रयोग कर रहाथा।प्रयोग के लिए प्लूटोनियम के टुकड़े की असेंबलिंग की आवश्यकता थी|प्रयोग में वह एक टुकड़े को दूसरे टुकड़े की ओर धीरे-धीरे धकेल रहा था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनका कुल द्रव्यमान एक श्रृंखला प्रतिक्रिया बनाने के लिए अधिक पर्याप्त नहीं होगा।जिस स्क्रू ड्राइवर से वह टुकड़ों को धकेल रहा था, वह फिसल गया और परिणामस्वरूप, प्लूटोनियम के टुकड़े एक-दूसरे के बहुत पास आ गए।दुर्भाग्य से, श्रृंखला प्रतिक्रिया कमरा भरने लगा| सात सहकर्मी वहाँ अपने उपकरणों पर श्रृंखला प्रतिक्रिया देख रहे थे।

तुरंत, एक पल गंवाए बिना, स्लॉटिन आगे बढ़ा और अपने नंगे हाथों से प्लूटोनियम के टुकड़ों को अलग कर दिया।वह बहुत अच्छी तरह जानता था कि यह वस्तुतः आत्महत्या का कार्य था, क्योंकि इससे उसे विकिरणशीलता (रेडियोधर्मिता) की सबसे बड़ी ख़ुराक का सामना करना पड़ा।घटना के तुरंत बाद स्लॉटिन ने शांतिपूर्वक अपने सहकर्मियों से दुर्घटना के समय उनकी सटीक स्थिति को चिह्नित करने के लिए कहा ताकि उनमें से प्रत्येक के रेडियोधर्मिता के संपर्क की डिग्री निर्धारित हो सके।ऐसा करने और डॉक्टरों को बुलाने के बाद, स्लॉटिन ने अपने सहकर्मियों से माफ़ी मांगी और वही कहा जो बाद में बिल्कुल सच निकला: वह मर जाएगा

और वे जीवित रहेंगे।

स्लॉटिन की कहानी का विश्लेषण नैतिकता के वीरतापूर्ण अनुपात को प्रदर्शित करता है।स्लॉटिन ने अपने नंगे हाथों से प्लूटोनियम के टुकड़ों को अलग करने का सबसे साहसी और नैतिक कार्य किया।उनकी कार्रवाई में थोड़ी सी भी देरी से जान-माल की भारी क्षति हो सकती थी।यह उनकी समझौता न करने की भावना ही थी कि लोगों का जीवन महत्वपूर्ण है अतः उन्होंने अपने जीवन की कीमत पर मानव-व्यक्ति के जीवन को बचाने और कल्याण के लिए बिना शर्त चिंता दिखाई। मानव जीवनके लिए बहुत अधिक चिंता के अतिरिक्त स्थिति का सटीक आकलन करने, निर्णय लेने की तीव्र क्षमता का प्रदर्शन किया और तदनुसार कार्य करने का साहस भी।

स्लॉटिन की कहानी बताती है कि नैतिकता में देखभाल, उद्देश्यपूर्ण निर्णय और दृढ़ कार्रवाई का एक अनूठा संयोजन होता है।इनमें से किसी भी तत्वों/पहलूओं के नहीं होने पर, कुल व्यवहारों के परिणामस्वरूप एक पूरी तरह से अलग स्थिति उत्पन्न होती|इस कहानी के आधार पर, कोई कह सकता है कि नैतिकता न तो कोई अच्छा मकसद है, न ही सही कारण, न ही दृढ़ कार्रवाई: यह संयुक्त रूप से तीनों है - देखभाल करना, निर्णय लेना एवं कार्य करना|निम्नलिखित अनुभागों में इनमें से प्रत्येक आयाम का संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास किया गया है।

3.5.1 देखभाल

देखभाल का तात्पर्य दूसरों की मदद के लिए आगे बढ़ना है।इसमें एक प्रकार की सामाजिक या मनोवैज्ञानिक समझ भी शामिल होती है। किसी दूसरे के लिए सहानुभूति की भावना का अर्थ है उसके बारे में सोचना और उसकी ज़रूरतों को भी समझना।"अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो", यह वक्तव्यदेखभाल का मूल अर्थ व्यक्त करता है|

प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, कैरल गिलिगन, नैतिकता की ओर देखभाल के अनुस्थापन की प्रबल समर्थक हैं। वह दूसरों की आवश्यकताओं पर ध्यान देने एवं प्रतिक्रिया देने के आदर्श को क़ायम रखती है। इस परिप्रेक्ष्य में यह शामिल है कि जरूरतमंदों की मदद करने के लिए कैसे प्रतिक्रियाशील तरीके से कार्य किया जाए।उसके अनुसार, बचपन में विशेष रूप से माँ के साथ संबंध में स्वयं को परखने और अनुभव करने के इस तरीके की उत्पत्ति पर कारणात्मक प्रभाव पड़ता है।'देखभाल' आम तौर पर महिला घटना है जबकि न्याय आमतौर पर एक पुरुष घटना है। यानी कुछ अपवादों को छोड़कर, पुरुष सामान्यतः अधिक न्याय-उन्मुख होते हैं जबकि महिलाएँ अधिक देखभाल-उन्मुख होती हैं। देखभाल न केवल न्याय प्रकरण से भिन्न है, बल्कि निर्णय के एक अलग रूप का भी प्रतीक है।तथ्य यह है कि देखभाल के संदर्भ में विचार करना उस आवश्यक शर्त की पुष्टि नहीं करता है जो कोहलबर्ग ने नैतिक व्यवहार - सार्वभौमिकता के "रूप" लिए निर्धारित की है। जैसा कि हमने पिछली इकाई में चर्चा की थी कि किसी भी नैतिक व्यवहार को सार्वभौमिक बनाया जाना चाहिए। इसे निम्नलिखित तरीके से समझ सकते हैं| यदि आप एक निश्चित स्थिति में एक निश्चित निर्णय पारित करते हैं, तो आपको प्रत्येक स्थिति में एक ही निर्णय स्वीकार करना होगा जो प्रासंगिक पहलुओं में समान है (कोहलबर्ग,1983 पी. 71-72)|संक्षेप में, सार्वभौमिकता का तात्पर्य मानदंडों, नियमों और मानकों के निष्पक्ष अनुप्रयोग से है।लेकिन देखभाल के मामले में, लोगों, स्थितियों और रिश्तों की विशिष्टता की धारणा एक केंद्रीय स्थान लेती है।देखभाल का दृष्टिकोण विशिष्टता पर केंद्रित है न कि

सार्वभौमिकता पर।अर्थात, यह निर्णय का विशिष्ट रूप है, जहां सार्वभौमिक अनुप्रयोग न्याय परिप्रेक्ष्य पर जोर दिया जाता है|

बोध प्रश्न1

i) स्लॉटिन की कहानी से आपको क्या समझ में आया?

.....

.....

.....

ii) देखभाल का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

iii) नैतिकता और नीतिशास्त्र में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

3.5.2 आंकना

जैसा कि ऊपर उद्धृत किया गया है, स्लॉटिन की कहानी के संदर्भ में निर्णय करना, नैतिक निर्णय की पर्याप्तता और उपयुक्तता का निर्णय करने से अलग अर्थ रखता है। जैसा कि देखभाल संबंधी अभिविन्यास की हमारी चर्चा से स्पष्ट है, विशेष रूप से जैसाकि गिलिगन और उनके सहयोगियों द्वारा दी गई चर्चा से, स्लॉटिन की कहानी देखभाल आयाम का एक विशिष्ट उदाहरण है। यहां निर्णय करने का सीधा अर्थ है स्थिति का आंकलन करना और शीघ्र आवश्यक क़दम उठाना। दूसरों की मदद करने या स्थिति को बिगड़ने से बचाने के लिए आगे बढ़ना अचिंतनीय है। देखभाल के परिप्रेक्ष्य में निर्णय लेने का अर्थ है अन्य लोगों की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना।

फिर भी, दूसरे अर्थ में निर्णय करना देखभाल करने से भिन्न है। हम प्रायः किसी नैतिक समस्या पर तर्क करते हैं या उसका मूल्यांकन करते हैंजिसमें दूसरों का कल्याण दांव पर होता है। हम नैतिक दायित्व के प्रश्नों के उत्तर खोजने की प्रवृति रखते हैं (ऐसे प्रश्न जो हमसे पूछते हैं कि दूसरों के संबंध में हमारा क्या कर्तव्य है)। ऐसी स्थितियों में हम स्वयं को तर्कसंगत रूप से सोचने की प्रक्रिया में संलग्न कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, क्या मुझे चुनाव में अपनी पार्टी के व्यक्ति का समर्थन करना चाहिए, भले ही मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि वह भ्रष्ट है या सार्वजनिक पद के लिए सक्षम है? ऐसे मामले में जहां हम स्वयं को नैतिक दुविधाओं में उलझा हुआ पाते हैं, हमें जश्न मनाने और अच्छाई के विभिन्न रंगों के बीच अंतर करने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त, कुछ विवादास्पद सामाजिक-नैतिक समस्याएं हैं जहां नैतिक निर्णय लेना

अधिक जटिल हो जाता है, इसके लिए अधिक चिंतनशील और सुविचारित विचार की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, 'इच्छामृत्यु (लाइलाज एवं दर्द की बीमारी से पीड़ित रोगी की हत्या), गर्भपात, आदि, जैसे विवादास्पद मुद्दे हैं। ऐसे मामले में अक्सर आम सहमति यह होती है कि दूसरे की जान लेना नैतिक रूप से बुरा है। लेकिन क्या आत्मरक्षा में या ऐसी स्थिति में जब राष्ट्र की सुरक्षा दांव पर लगी हो, किसी व्यक्ति की हत्या करना बुरा होगा?

नैतिक निर्णय नैतिक दायित्व के प्रश्नों और नैतिक मूल्यों के प्रश्न से भी निपटता है।हम नैतिक दायित्व का निर्णय तब करते हैं जब हम कहते हैं कि दी गई स्थिति कोई कार्य नैतिक रूप से सही है या ग़लत या इस कार्य को किया जाना चाहिए या नहीं किया जाना चाहिए। जब हम अपने कृत्यों के सही या ग़लत होने के बारे में बात करते हैं, तो हम इस बारे में बात कर रहे होते हैं कि हमें दूसरों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए। किंतु जब हम कुछ विशेष लोगों, उद्देश्यों या चरित्रिक लक्षणों को आंकते हैं तोकार्यों या प्रथाओं के बारे में आंकलन के विपरीत, हम लोगों के बारे में क्या अच्छा या बुरा, योग्य या अयोग्य है, के बारे में व्यक्त कर रहे हैं।नैतिक मूल्यों के बारे में निर्णय के उदाहरण इस प्रकार हैं: बदला लेना एक तुच्छ उद्देश्य है; आत्म-संतुष्टि ही शिक्षा का एकमात्र वैध लक्ष्य है| नैतिक मूल्यों के विवरण इस बारे में दावे हैं कि अच्छे जीवन में क्या शामिल है; मौलिक रूप से क्या सार्थक है एवं क्या आगे बढ़ाया जाना चाहिए, संजोया जाना चाहिए तथा अगली पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाना चाहिए।

3.5.3 नैतिकता और न्याय

कोहलबर्ग (1964) ने नैतिक विकास पर पियागेट के विचारों को पूरक एवं विस्तारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पियागेट ने नैतिकता के अपने सिद्धांत को विकसित करने में प्रसिद्ध समाजशास्त्री दर्खीम और महान जर्मन दार्शनिक, इमैनुएल कांट का सहारा लिया।दुर्खीम का मानना था कि जहाँ तक हम सामाजिक प्राणी हैं, हम नैतिक प्राणी हैं। एक अवधारणा के रूप में नैतिकता केवल समाज के संदर्भ में सार्थक है।कांट की 'इच्छा' की विधर्मिता एवं स्वायत्तता के बीच अंतर पर विचार करते हुए पियागेट (1932) दो प्रकार की नैतिकता की बात करता है - पारंपरिक नैतिकता और तर्कसंगत नैतिकता| जब हमारा आचरण दूसरों की पसंद पर निर्भर करता है, तो यह 'इच्छा' की विषमता द्वारा निर्देशित होता है: या इसे पारंपरिक नैतिकता कहते हैं। हम दूसरों की अस्वीकृति के डर से, या पहचाने जाने के डर से अवांछनीय आचरण से बचते हैं। लेकिन जब व्यक्ति 'इच्छा' की स्वायत्तता के स्तर पर पहुंचता है, तो उसका व्यवहार उसके अपने तर्कसंगत नैतिक विकल्पों द्वारा निर्देशित होता है। इस नैतिकता को तर्कसंगत नैतिकता कहा जाता है।

वास्तव में, पियागेट बच्चों के नैतिक निर्णय की प्रकृति का पता लगाना चाहता था।इसे प्राप्त करने के लिए उन्होंने तीन क्षेत्रों में काम किया: (i) नियमों के प्रति उनका दृष्टिकोण; (ii) उनका सही एवं गलत का निर्णय; एवं (iii) न्याय तथा निष्पक्षता का उनका आंकलन। अपने अनुदैर्ध्य और अंतर-अनुभागीय अध्ययनों के माध्यम से पियागेट ने पाया कि व्यक्ति का नैतिक विकास इच्छा की विषमता से इच्छा की स्वायत्तता की ओर एक प्रगति है- पारंपरिक नैतिकता से तर्कसंगत नैतिकता तक। पारंपरिक नैतिकता में बच्चे वयस्कों की आज्ञाओं एवं नियमों का पालन बिना सोचे-समझे करते हैं। किंतु जब बच्चे आलोचनात्मक चिंतन के बाद नियम बनाने या स्वीकार करने में सक्षम होते हैं, तो कहा जा सकता है कि वे तर्कसंगत नैतिकता तक पहुंच गए हैं।

पियागेट की तरह, कोह्लबर्ग भी इस बात पर जोर देते हैं कि नैतिक विकास एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया हैऔर नैतिक निर्णय पर आधारित है।नैतिक निर्णय बच्चों के तर्क पर भी निर्भर करता है। अंतिम विश्लेषण में, कोहलबर्गियन नैतिकता न्याय की नैतिकता है। अच्छा कार्य वह है जो न्यायिक या उचित हो। न्याय के दृष्टिकोण से, नैतिक समस्याओं को दावों के बीच संघर्ष के रूप में माना जाता है, विशेषकर व्यक्तियों के अधिकारों और कर्तव्यों के बीच। नियमों, मानकों या सिद्धांतों के संदर्भ में निर्णय करना नैतिकता के न्याय दृष्टिकोण के अनुकूल है। मानदंडों (संपत्ति, जीवन, अनुबंध, वादा, मानदंड इनसे कैसे संबंधित हैं, यह समझाया जा सकता है)की व्याख्या मूल्यों के दायरे के रूप में की जा सकती है जो ठोस नियमों को लागू करती है। सिद्धांत उन प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो किसी व्यक्ति को तर्कसंगत रूप से निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं ऐसी स्थितियाँ जिनमें अलग-अलग मानदंड लागू होते हैं या जिनमें कुछ नियमों की उपयुक्तता के बारे में अनिश्चितता होती है।

3.5.4 कार्य (अभिनय)

अभिनय (क्रिया) के बारे में शायद सबसे महत्वपूर्ण बात जो कही जा सकती है वह यह है कि यह अपने आप में नैतिक या अनैतिक नहीं है। किसी व्यक्ति के उद्देश्यों या निर्णयों से बाहर उसके कार्यों का कोई नैतिक मूल्य नहीं है। स्लॉटिन द्वारा प्लूटोनियम के टुकड़ों को अलग करना नैतिक/अनैतिक नहीं था। जो चीज इसे सबसे अधिक नैतिक बनाती है वह है देखभाल करने और निर्णय लेने का गुण - अलग होने के कार्य से जुड़ा मकसद या इरादा। उदाहरण के लिए, हत्याजब आत्मरक्षा में की जाती है या यदि आक्रमणकारी नैतिक रूप से गलत नहीं है, लेकिन बुरे इरादे से किया गया वही कार्य (हत्या) अपराध बन जाता है और व्यक्ति को अपराधी बना देता है।फिर भी, कुछ व्यवहार ऐसे हैं, जिन्हें हम शिक्षक के रूप में बढ़ावा देते हैं और कुछ ऐसे हैं, जिनकी हम निंदा करते हैं।उदाहरण के लिए, जब बच्चे एक-दूसरे को मारते हैं, गाली देते हैं, जानबूझकर कक्षाएं छोड़ते हैं, सामान साझा करने से इंकार करते हैं आदि, व्यवहारकी हम सराहना नहीं करते हैं।किंतु जब कोई छात्र बुजुर्गों की देखभाल, विकलांगों की मदद जैसे काम करता है, तो हम ऐसे व्यवहार की सराहना करते हैं।मनोवैज्ञानिकों का कहना है किइससे पहले कि बच्चे इस तरह के व्यवहार के लिए पूरी तरह से तर्कसंगत औचित्य का पता लगा सकें उनमें कुछ विशेष व्यवहार जैसे अपनी बारी का इंतज़ार करना, जरूरतमंदों की सहायता करना, सामान साझा करना आदि को भी सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

कुछ प्रकार के व्यवहारों की निंदा करने का एवं कुछ अन्य प्रकारों की सराहना करने का सबसे प्रशंसनीय कारण यह है कि बच्चे स्वभाव से ही नादान एवं अपरिष्कृत होते हैं।उनका व्यवहार संगत भावनाओं, संवेदनाओं और इरादों से निर्देशित होता है।वे किसी भी भावना या इरादे को छुपाए बिना व्यवहार करते हैं,क्योंकि उनमें अभी तक समीचीनता की क्षमता विकसित नहीं हुई है।इसलिए सज़ा देने वाला शिक्षक किसी बच्चे को दूसरे बच्चे को मारने के लिए सराहता नहीं है, बल्कि अपने सहपाठियों की मदद करने के लिए दूसरे की सराहना करता है, इस विश्वास के साथ कि बच्चे में भी वैसी ही भावना है।बच्चों की हरकतें हमेशा कुछ खास तरह की भावनाओं या संवेदनाओं से युक्त होती हैं।यदि X को Y के बारे में बुरा लगता है, तो वह उसके साथ दुर्व्यवहार कर सकता/सकती है, बातें साझा करने से इंकार कर सकता/सकती है।यदि कोई छात्र 'ए' दूसरे छात्र 'बी' की मदद करने से मना करता है, तो ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि 'बी' ने 'ए' की मदद नहीं की होगी।बच्चों के व्यवहार के सदैव कुछ कारण होते हैं।इसलिए कुछ विशेष प्रकार के कार्यों के लिए, जिन्हें हम बुरा मानते हैं, किसी बच्चे की अंधाधुंध निंदा करना

वांछनीय नहीं है। हमें चिंतन करना चाहिए, कारण का पता लगाना चाहिए और फिर स्थिति का समाधान करना चाहिए। हमें संपूर्ण स्थिति का संज्ञान लेना चाहिए न कि केवल उस विशेष कार्य का जो बच्चा करता है।वास्तव में, बच्चों का व्यवहार व्यापक सामान्यीकरणों पर आधारित नहीं है, क्योंकि उनमें अभी तक ऐसी कोई क्षमता विकसित नहीं हुई है।और इसलिए, जब एक विशेष व्यवहार की सराहना की जाती है, साथ ही उस भावना की भी सराहना की जाती है जो उस परिस्थिति में बच्चे के मन में थी।इसी प्रकार, जब किसी विशिष्ट व्यवहार की निंदा की जाती है, तो यह उस भावना के साथ की जाती है, जो उस व्यवहार से जुड़ी थी।जाहिर तौर पर बाल विकास के प्रारंभिक चरण में शिक्षक का काम होता हैसहयोग, सच बोलना, ईमानदारी, दूसरों की मदद करना आदि जैसी आदतों की सराहना करें और उन्हें सुदृढ़ करें।तर्क करने की शक्ति विकसित होने से बच्चों को इसके पीछे के तर्क का पता चल जाएगा।इसलिए, उन्हें ऐसी सरल आदत निर्माण के माध्यम से जीवन के लोकतांत्रिक तरीके से परिचित कराया जाना चाहिए।हालाँकि क्रिया अपने आप में एक नैतिक श्रेणी नहीं है, फिर भी क्रिया के अवसर और कार्रवाई पर चिंतन के बिना, नैतिक विकास होना मुश्किल है।जबकि शिक्षकों को चाहिएसावधान रहें किसामाजिक अनुरूपता की तुलना नैतिकता से न करें,यह हो सकता है कि सामाजिक सम्मेलनों में एक मजबूत आधार नैतिक स्वायत्तता के मार्ग पर एक अपरिहार्य तैयारी प्रदान करता है।नैतिक शिक्षा के लक्ष्यों को परम्परागत प्रशिक्षण तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए बल्कि ऐसा प्रशिक्षण एक सहायक अर्थ में महत्वपूर्ण हो सकता है|

बोध प्रश्न 2

i) पियागेट के अनुसार नैतिकता के दो प्रकार क्या हैं?

……

……

……

ii) सामान्य व्यवहार के रूप में क्रिया का तात्पर्य क्या है?

……

……

……

iii) ऐसे व्यवहारों के उदाहरण दीजिए जिनकी शिक्षक सराहना नहीं करते?

……

……

……

iv) बच्चों के कार्यों की विशिष्टता का वर्णन करें?

……

……

……

……

3.6 सारांश

वर्तमान इकाई में नैतिकता के विभिन्न आयामों/परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा शामिल है।हमने देखा कि नैतिकता एक बहुआयामी अवधारणा है, जो तीन अलग-अलग चरणों से संबंधित है जो कि तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से जुड़े हुए हैं।दूसरों की देखभाल करना, उस स्थिति का आकलन करना जिसमें नैतिक एजेंट को कार्य करना है और फिर कार्य करना,ये नैतिक व्यवहार के तीन अलग लेकिन संबंधित पहलू हैं। इनमें से किसी भी पहलू से रहित व्यवहार को नैतिक व्यवहार नहीं कहा जा सकता।निर्णय लेने की प्रकृति पर चर्चा करते हुए, यह स्पष्ट किया गया है कि निर्णय का तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें नैतिक निर्णय लिया जाना है।हमने नैतिक निर्णय के गुणों पर भी चर्चा की,जिसमें नैतिक कार्य शामिल हैं।

इस संबंध में पियागेट, कोहलबर्ग और उनके सहयोगियों द्वारा प्रतिपादित तर्क और निर्णय नैतिकता के विकासात्मक सिद्धांतों का संदर्भ दिया गया।इस बात पर प्रकाश डाला गया कि नैतिक निर्णय में मूल्यों, नियमों और सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।नैतिक निर्णय में व्यवहार की सार्वभौमिकता केंद्रीय विषय है|इसके विपरीत, कैरोल गिलिगन द्वारा दी गई नैतिकता के प्रति देखभाल संबंधी अभिविन्यास विशिष्ट है।

नैतिकता के अभिनय (कार्रवाई) आयामों पर संक्षेप में चर्चा की गई है, जिससे पता चलता है कि कार्रवाई नैतिक रूप से तटस्थ है। यह अच्छा है या बुरा यह कार्य से जुड़े उद्देश्यों और इरादों पर निर्भर करता है।अंत में हमने इस बात पर भी चर्चा की कि स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों में किसी प्रकार का नैतिक प्रशिक्षण क्यों आवश्यक है, इस तथ्य के बावजूद कि नैतिक प्रशिक्षण की तुलना नैतिक शिक्षा से नहीं की जा सकती।कोमल मस्तिष्कों के लिए नैतिक प्रशिक्षण की सिफ़ारिश करने का मुख्य कारण यह है कि छोटे बच्चों द्वारा किया गया कोई भी अच्छा या बुरा कार्य हमेशा संबंधित भावनाओं या संवेदनाओं से जुड़ा होता है।

3.7 बोध प्रश्नकेउत्तर

बोध प्रश्न 1 के उत्तर

i) स्लोटिन की कहानी नैतिकता की बहुआयामी और बहुमुखी अवधारणा को स्पष्ट करती है। यह कहानी बताती है कि नैतिकता में देखभाल, वस्तुनिष्ठ निर्णय और दृढ़ कार्रवाई का एक अनूठा संयोजन होता है।

ii) देखभाल का अर्थ है दूसरों की मदद के लिए आगे बढ़ना, इसमें एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक समझ भी शामिल है।

iii) नैतिकता एवं निति ऊपरसे समान प्रतीत होती है, लेकिन गहराई से विश्लेषण करने पर एक सूक्ष्म अंतरदिखेगा।अर्थात, मांस का सेवन करना किसी के लिए नैतिक हो सकता है और साथ ही उसी व्यक्ति को किसी पशु का वध करने का विचार भी घृणित लग सकता है।इसका तात्पर्य यह है कि नैतिकता उस संहिता को परिभाषित करती है जिसका एक समाज या लोगों का समूह पालन करता है, जबकि नैतिकता व्यक्तिगत और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर बहुत गहरे स्तर पर सही और गलत की पड़ताल करती है।

बोध प्रश्न 2 के उत्तर

i) पियागेट के अनुसार दो प्रकार की नैतिकता पारंपरिक नैतिकता हैऔर तर्कसंगत नैतिकता|

ii) कार्य अपने आप में नैतिक या अनैतिक नहीं है।उदाहरण के लिए, आत्मरक्षा के लिए की गई हत्या नैतिक रूप से गलत नहीं है, लेकिन जब किसी बुरे उद्देश्य से हत्या की जाती है तो वह हत्या बन जाती है और एक अनैतिक व्यवहार है।

iii) जब बच्चे एक-दूसरे को मारते हैं, गाली देते हैं, जानबूझकर कक्षाएं छोड़ते हैं, सामान साझा करने से इंकार करते हैं, ऐसे व्यवहारों की शिक्षक सराहना नहीं करते हैं|

iv) बच्चों की हरकतें हमेशा कुछ खास तरह की भावनाओं या संवेदनाओं से युक्त होती हैं।यदि X को Y के बारे में बुरा लगता है, तो वह उसके साथ दुर्व्यवहार कर सकता/सकती है, बातें साझा करने से इंकार कर सकता/सकती है।यदि कोई छात्र 'ए' दूसरे छात्र 'बी' की मदद करने से मना करता है, तो ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि 'बी' ने 'ए' की मदद नहीं की होगी।बच्चों के व्यवहार के सदैव कुछ कारण होते हैं।

3.8 सन्दर्भ

अयेर, ए.जे. (1946) लैंग्वेज ट्रुथ एंड लॉजिकिनडाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी. (1982), मोरल एजुकेटियो, लंदन: हार्पर एंड रो।

बेयर, के. (1975) डाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी. में शिक्षा के एक उद्देश्य के रूप में नैतिक स्वायत्तता। (1982), नैतिक शिक्षा। लंदन: हार्पर एंड रो।

डागर बी.एस. और ढुल, इंदिरा (1995) पर्सपेक्टिव्स इन मोरल एजुकेशन, नई दिल्ली: उप्पल पब्लिशिंग हाउस।

डाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी. डाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी.(1982).मोरलएजुकेशन.लंदन: हार्पर एंड रो।

हरे, आर.एम. (1974) फ्रीडम एंड रीज़न, ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हर्श, आर, डायना पाओलिटो, और जोसेफ रिमर (1979)। नैतिक विकास को बढ़ावा देना: पियागेट से कोहलबर्ग तक। न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन.

हर्स्ट, पी.एच. (1974) मोरल एजुकेशन इन सेक्युलर सोसाइटी, लंदन: होडर और स्ट्रैंगटन।

हर्स्ट, पी.एच. और पीटर्स, आर.एस. (1971). शिक्षा का तर्क. लंदन: रूटलेज और केगन पॉल।

कोहलबर्ग, एल. (1963) नैतिक विकास और पहचान, शिकागो: शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

पीटर्स, आर.एस. (1966) एथिक्स एंड एजुकेशन, लंदन: एलन एंड अनविन।

पीटर्स, आर.एस. (1973) रीज़न एंड कम्पैशन, लंदन: रूटलेज और केगन पॉल।

इकाई 4 लोकतंत्र के स्तंभ: शांत एवं सद्भावपूर्ण जीवन यापन

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 लोकतंत्र की अवधारणा: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

4.4 लोकतंत्र की आधुनिक अवधारणा

4.5 व्यक्तिगत सामाजिक नैतिकता के रूप में लोकतंत्र

4.6 लोकतंत्र के सिद्धांत

4.6.1 व्यक्तित्व का सम्मान

4.6.2 मानव बुद्धि में विश्वास

4.6.3 उचितभागीदारी के लिए अधिकार एवं उत्तरदायित्व

4.7 शिक्षा में लोकतंत्र

4.7.1 समानता एवं शिक्षा की अवधारणा

4.7.2 शिक्षा में स्वतंत्रता

4.7.2.1 स्वतंत्रता के प्रकार

4.8 सारांश

4.9 बोध प्रश्न के उत्तर

4.10 सन्दर्भ

4.1 प्रस्तावना

संभवतः हममें से प्रत्येक का अंतिम उद्देश्य शांति और सद्भाव से रहना है।वास्तव में, सभी सचेतन मानवीय गतिविधियों का लक्ष्य, जिसमें हम जीवन भर संलग्न रहते हैं, वह शांति और सद्भाव प्राप्त करना है। शांति और सद्भाव से रहना एक "अंत-स्वयं' है, जिसके लिए सभी गतिविधियां "साधन" के रूप में कार्य करती हैं।जीवन में हमारे सभी प्रयास इस अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से किए जाते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत मानवीय गतिविधियों पर बल्कि हमारी सामाजिक गतिविधियों एवं राजनीतिक गतिविधियों पर भी लागू होता है|हम ऐसेसमाज और सरकार को प्राथमिकता देते हैं जो हमें अपने साथियों के साथ और स्वयं के साथ शांति तथा सद्भाव से रहने में सक्षम बना सकता है।

तथापि, शांति और सद्भाव में रहना इस बात पर निर्भर करता है कि हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और हम कैसे शासित होना पसंद करते हैं, या हम वास्तव में कैसे शासित होते हैं। भारत में हमने लोकतंत्र को न केवल सरकार के रूप में, बल्कि जीवन शैली के रूप में भी चुना है। क्योंकि यह केवल लोकतंत्र ही है, जो सैद्धांतिक रूप से समाज के अन्य व्यक्तियों के हितों से समझौता किए बिना अधिकतम व्यक्तिगत विकास हेतु हमें आश्वस्त कर सकता है|

सही अर्थों में लोकतंत्र, समानता व्यक्तित्व, अधिकारों और कर्तव्यों, समावेशी भागीदारी, न्याय आदि के प्रति सम्मान जैसी कुछ अवधारणाओं पर टिका है| इस इकाई में, हम ऐसी सभी अवधारणाओं पर चर्चा करने का प्रयास करेंगे जिन्हें लोकतंत्र के स्तंभ कहा जा सकता है और देखेंगे कि हम शांति और सद्भाव के साथ साथ पूर्ण व्यक्तिगत सामाजिक विकास कैसे प्राप्त कर सकते हैं|

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आपसे अपेक्षा की जाती है:

- उन बुनियादी सिद्धांतों को बता सकेंगे जिन पर उदार लोकतंत्र की स्थापना की गई है;
- यह स्पष्ट कर सकेंगे कि लोकतंत्र किस प्रकार एक व्यक्तिगत-सामाजिक नैतिकता है;
- लोकतंत्र की आधुनिक अवधारणा के मूलभूत सिद्धांतों को पहचानें और समझाएं
- वर्णन कर सकेंगे कि लोकतांत्रिक जीवन कैसे दूसरों के साथ शांति और सद्भाव सुनिश्चित कर सकता है;
- स्वतंत्र जांच के प्रवर्तक के साथ-साथ इसके निवारक के रूप में भी जनसंचार माध्यमों की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे|

4.3 लोकतंत्र की अवधारणा: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

ईसा के जन्म से लगभग पाँच सौ साल पूर्व, एथेंस के शहर-राज्य ने एक राजनीतिक व्यवस्था की, जिसने अंतिम अधिकार कुछ या एक व्यक्ति की जगह जनताके हाथों में दे दिया|अतः लोगों द्वारा शासन करना उस शब्द का अर्थ था जिसके द्वारा लोकतंत्र की शुरुआत हुई।लेकिन इस शब्द का अर्थ विभिन्न रंगों एवं बदलते संदर्भों के साथ और धीरे-धीरे वर्षों में एक अवधारणा के रूप में विकसित हुआ।अब, यह शब्द सरकार के स्वरूप या किसी अन्य संदर्भ में "लोगों द्वारा शासन" से कहीं अधिक बताता है।फिलिप जी. स्मिथ एथेंस लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं बताते हैं:

i) एक वैध सरकार में भागीदारी के लिए प्रत्येक नागरिक के अधिकार एवं उत्तरदायित्व;

ii) सार्वजनिक एवं निजी मामलों में अंतर, तथा

iii) यह मान्यता कि निजी मामलों को भी सामाजिक-नैतिक संहिता द्वारा विनियमित किया जाना चाहिए जो सरकारी मामलों का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धांतों के अनुरूप हो।

स्पष्ट रूप से, एथेंस लोकतंत्र में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक तथा नैतिक विचार शामिल थे।

4.4 लोकतंत्र की आधुनिक अवधारणा

उदारवादीलोकतंत्र

लोकतंत्र की आधुनिक अवधारणा लोकतंत्र का उदार रूप है और संयुक्त राज्य अमेरिका की स्वतंत्रता की घोषणा पर आधारित है - 1776 में दिया गया एक बयान जिसमें सरकार की

अवधारणाओं के रूप में "प्राकृतिक अधिकार" और "सामाजिक अनुबंध" की धारणाएं शामिल थीं।अमेरिकी लोकतंत्र के कई संस्थापक लोकतंत्र की यूनानी अवधारणा को मानते हैं।समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसी अवधारणाओं पर विचार-विमर्शकरके उन्होंने इनके प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाया।अमेरिकी लोकतंत्र की अवधारणा अब्राहम लिंकन के लोकतंत्र के विचार पर आधारित है:"जनता की, जनता के द्वारा और जनता के लिएसरकार।"

इस परिभाषा का तात्पर्य यह है कि लोकतंत्र एक प्रक्रिया है, न कि कठोर राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में जकड़ा हुआ समाज।इस प्रकार के लोकतंत्र का मुख्य उद्देश्य राज्य के अधिकार का निर्माण करना नहीं अपितु व्यक्तियों की क्षमताओं की अधिकतम पूर्ति सुनिश्चित करनाहै।लोकतंत्र तभी तक जीवित रहेगा जब तक वह लोगों के दिलों में जीवित रहेगा, क्योंकि यह कानूनोंके बजाय जीवन के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।लोकतंत्र शांतिपूर्ण लेन-देन के माध्यम सेकार्य करता है।प्रतिस्पर्धी और परस्पर विरोधी समूहों को उचित रूप से सुनने का अवसर दिया जाना चाहिए।लोकतंत्र शांतिपूर्ण लेन-देन के माध्यम सेकार्य करता है।किसी अन्य तरीके से लोग बुद्धिमान या तर्कसंगत निर्णय नहीं ले सकते।शिक्षकों को इसका अभ्यास करने और बच्चों में ऐसी भावनाएँ विकसित करने की आवश्यकता है।

4.5 व्यक्तिगत सामाजिक नैतिकता के रूप में लोकतंत्र

लोकतंत्र के कुछ समर्थकों ने तर्क दिया है कि लोकतंत्र को एक प्रक्रिया के शीर्षक के रूप में माना जाना चाहिए।तथापि, आजकल के लोग लोकतंत्र का उपयोग सिद्धांतों के एक समूह, एक प्रक्रिया या शासन के तरीके के नाम के रूप में कर रहे हैं।लोकतंत्र शब्द का विस्तृत अर्थ मनुष्य के स्वभाव से संबंधित हो जाता है एवं इसमें मनुष्य एवं प्रकृति, व्यक्ति तथा समाज के साथ-साथ स्वतंत्रता, समानता, अधिकार, न्याय और कई अन्य अवधारणाओं के बीच संबंध भी शामिल होता है। मनुष्य के इन विभिन्न विचारों में से प्रत्येक लोकतंत्र के अर्थ का एक रूप सुझाता है, पहले नैतिकता के रूप में और फिर सरकार की शैली के रूप में। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य की प्रकृति के बारे में स्पष्ट रूप से भिन्न विचार रखने वाले दो समाज, स्पष्ट रूप से भिन्न आदर्शों और प्रथाओं को संदर्भित करने के लिए लोकतंत्र शब्द का प्रयोग करेंगे।

4.6 लोकतंत्र के सिद्धांत

हम जानते हैं कि नैतिकता में मानव आचरण के मार्गदर्शक सिद्धांतों का एक समूह शामिल है।उदाहरण के लिए, एक ईसाई नीति है, "दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें"।मनुष्य और समाज की प्रकृति के संबंध में अलग-अलग विचार रखने वाले व्यक्तियों में राजनीतिक मामलों सहित व्यक्तिगत सामाजिक मामलों के विनियमन के लिए कुछ मार्गदर्शक सिद्धांतों के बारे में आम सहमति हो सकती है।वास्तव में राजनीतिक संरचनाएँ ऐसी बनाई जाती हैं जो मनुष्य और समाज की प्रकृति के विचारों और मानव आचरण के मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुरूप होती हैं।

यद्यपि लोकतंत्र के सिद्धांतों पर पूर्ण सहमति नहीं है, निम्नलिखित सिद्धांत प्रायः स्वीकार किए जाते हैं एवं लोकतंत्र के अर्थ के संबंध में एक अच्छे मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकते हैं।

- व्यक्तित्व और उस स्थिति के प्रति सम्मान जो मानव व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा देती है।

- मानव बुद्धि में विश्वास स्वतंत्र, स्वायत्त जांच की प्रक्रिया के माध्यम से गठित और सूचित किया गया।
- जांच में उचित भागीदारी के अधिकार एवं उतरदायितव एवं साझा चिंता की समस्याओं का समाधान।

व्यक्तिगत सामाजिक नैतिकता से संबंधित लोकतंत्र की इन चिंताओं और विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझाया गया है:

4.6.1 व्यक्तित्व का सम्मान

इससे पहले इस इकाई में यह माना गया था कि मनुष्य की प्रकृति के बारे में अलग-अलग विचार लोकतंत्र को अलग-अलग अर्थ देंगे।उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो मानता है कि व्यक्ति का महत्व उस समाज के साथ जिससे वह जुड़ा हुआ है उसकी पहचान की सीमा से संबंधित है, वह व्यक्तित्व को एक अर्थ देगा। और जो व्यक्ति किसी व्यक्ति के महत्व को केवल उसके व्यक्तित्व के आधार पर मानता है, वह इसे पूरी तरह से अलग अर्थ देगा। इसका तात्पर्य यह है कि वे उन स्थितियों के संबंध में मौलिक रूप से भिन्न राय रखेंगे जो मानव व्यक्तित्व के विकास को सर्वोत्तम रूप से बढ़ावा दे सकती हैं।

अधिकांश भारतीय समाज इन दोनों अतिवादी विचारों को अस्वीकार करते हैं। हममें से लगभग सभी इस विचार से सहमत हैं कि आर्थिक, सामाजिक, नस्लीय या धार्मिक विचारों की परवाह किए बिना प्रत्येक व्यक्ति आदर्श रूप से उन मामलों में जो सार्वजनिक चिंता का विषय नहीं हैं कुछ निश्चित गोपनीयता का हक़दार है ।इसी प्रकार, वह उन मामलों में जो सार्वजनिक चिंता का विषय हैं क़ानून के समक्ष समानता की/का हक़दार है। जब ऐसे अधिकारों को स्वीकार नहीं किया जाता है, तो हम कहते हैं कि ग़लत किया गया है।

व्यक्तित्व के सम्मान में सार्वजनिक और निजी मामलों के बीच अंतर शामिल है।इस तरह के अंतर के आधार पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक नियंत्रण के बीच एक उपयुक्त समायोजन की आवश्यकता होती है।दोनों के बीच उचित समायोजन करने के लिए, सबसे पहले कानून द्वारा आचरण के कुछ नियम लागू किए जाने चाहिए।नियम क्या होने चाहिए यह मानवीय मामलों में एक मुख्य प्रश्न है। इस संबंध में, जॉन, स्टुअर्ट मिल (1859), निम्नलिखित मार्गदर्शिका प्रस्तुत करता है: "सभ्य समुदाय के किसी भी सदस्य पर उसकी इच्छा के विरुद्ध शक्ति का उचित प्रयोग करने का एकमात्र उद्देश्य उसे दूसरों को नुकसान पहुंचाने से रोकना है। उसका अपना भला, चाहे शारीरिक हो या नैतिकपर्याप्त सनद नहीं है| उसे उचित रूप से कोई कार्य करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता क्योंकिइससे उसे ख़ुशी होगी, या क्योंकि ऐसा करना उसके लिए बेहतर होगा, या क्योंकि दूसरों की राय में ऐसा करना बुद्धिमानी या सही होगा। उसे मनाने के लिए ये अच्छे कारण हैं लेकिन उसे मजबूर करने के लिए नहीं। हमें केवल उन मामलों में किसी व्यक्ति को रोकने या उसे कुछ कार्य न करने के लिए मजबूर करने का अधिकार है जहां उसके कार्यों से दूसरों को हानि होती है"।

जॉन डेवी ने भी एक बार यह बताया था कि व्यक्तियों को उनकी इच्छानुसार व्यवहार करने की अनुमति दी जा सकती है, जब तक कि अन्य व्यक्तियों द्वारा उनके कार्यों के हानिकारक प्रभावों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इस प्रकार व्यक्तियों को सड़क पर कचरा फेंकने केलिए संदर्भित किया जा सकता है। ऑटोमोबाइल निर्माताओं को सभी नए ऑटोमोबाइल को सुसज्जित करने

की आवश्यकता हो सकती है, जो प्रदूषणआदिनियंत्रित कर सके| इसकातात्पर्य कभी नहीं होता व्यक्ति को उसे वह करने की अनुमति दी जाए जो वह करना चाहता/चाहती है।

नैतिक विचारों से घनिष्ठ रूप से संबंधित उन स्थितियों के सम्मान का मामला है जो मानव व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा देते हैं। इस संबंध में कम से कम दो बिंदुओं पर ध्यान दिया जा सकता है। प्रथम, "किसी प्रक्रिया के मामले में विकास दिशाहीन नहीं है।'अर्थात, विकास कोई साधारण परिवर्तन या बदलाव नहीं है।द्वितीय, व्यक्तित्व के विकास पर विभिन्न परिस्थितियों का प्रभाव एक आनुभविक मामला है।अतः, किसी भी समय किन विशेष शर्तों का सम्मान किया जाना चाहिए, इसमें वैचारिक एवं तथ्यात्मक दोनों विचार शामिल होते हैं।इसलिए, किसी भी समय किन विशेष शर्तों का सम्मान किया जाना चाहिएइसमें वैचारिक और तथ्यात्मक दोनों तरह के विचार शामिल होते हैं।एक ओर, लोगों का मानना है कि सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित और बढ़ते व्यक्तित्व की विशेष छवि एक स्थिर अवधारणा नहीं है; ऐसे व्यक्तित्व के विकास को सुनिश्चित करने के लिए हमें उस समय उपलब्ध वैज्ञानिक ज्ञान की आवश्यकता है। इसलिए यह सिद्धांत लोकतंत्र पर प्रतिबंध नहीं लगाता है।यह हमेशा के लिए अधूरा रह सकता है और संभवतः मानव व्यक्तित्व की नई संभावनाओं को पहचाना जाएगा।

4.6.2 मानव बुद्धि में विश्वास

पहले, हम इस प्रश्न पर विचार करना शुरू कर सकते हैं कि कैसे लोकतंत्र और मानव बुद्धि में विश्वास एक दूसरे से संबंधित है, यह समझना महत्वपूर्ण है कि "मानव बुद्धि में विश्वास" वाक्यांश का वास्तव में लोकतंत्र से क्या तात्पर्य है। क्या इसका मतलब यह है कि बुद्धि पूरी जनसंख्यामेंसर्वत्र समान रूप से फैली हुई है, सत्य और अधिकार का निर्धारण बहुमत के मत से किया जा सकता है कि लोकप्रिय राय हमेशा सही होती है?

इसका अर्थ यह है कि हम सत्य का अनुसरण करने से या त्रुटि को सहन करने से नहीं डरते हैं, चाहे वह कहीं ले कर जाए| वैज्ञानिक या लोकतांत्रिक समुदाय में, विशेषज्ञ, मेधावी, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान लोगों को अपने विचारों को विकसित करने के लिए स्वतंत्र किया जा सकता है, बिना यह बताए कि उनकी पूछताछ में कौन सी सच्चाई सामने आनी चाहिए|एवं ऐसे ही, कम प्रतिभाशाली लोगों को सम्मानजनक काम मिल सकता है और वे अपने विचारों या सुझावों के लिए निष्पक्ष सुनवाई का आदेश दे सकते हैं।अतः, मानव बुद्धि में विश्वास का अर्थ यह नहीं है कि हम मानते हैं कि लिया जा सकने वाला प्रत्येक निर्णय सर्वोत्तम होगा, किंतु सामूहिक बुद्धिमत्ता (स्वतंत्र पूछताछ की उचित शर्तें दी गई हैं) सुधार के रास्ते खुले रखने के लिए काफी अच्छी होगी और लंबे समय में, किसी भी उपलब्ध विकल्प की तुलना में अधिक सफ़ल होगी।विज्ञान या लोकतंत्र, दोनों में से कोई भी किसी प्रकार की धार्मिक या गैर-धार्मिक प्रतिबद्धता पर आधारित नहीं है। एक वैज्ञानिक के रूप में व्यक्ति यह पहचानता है कि वह और अन्य वैज्ञानिक भी अनुमान लगाने के लिए समान रूप से स्वतंत्र हैं। इसी प्रकार, लोकतांत्रिक समुदाय का कोई भी सदस्य किसी विशेष धर्म के औचित्य या मानवतावादी और प्रकृतिवादी आधार पर किसी अन्य औचित्य के अनुसार कोई भी आस्था अपना सकता है।

4.6.3 उचितभागीदारी के लिए अधिकार एवं उत्तरदायित्व

उचित भागीदारी के संदर्भ में, लोकतंत्र का तात्पर्य है कि किसी भी जनता के प्रत्येक सदस्य को समस्या की जांच और समाधान में भाग लेने का अधिकार है।इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति

को जनता और उसके हितों और समस्याओं के प्रति रुचि और चिंता है। एक प्रकार से व्यक्ति स्वयं को जनता से जुड़ा हुआ महसूस करता है| समाज (जनता) के प्रति ऐसी अपनत्व की भावना होने के कारण, भागीदारी का अधिकार अपने साथ उस अधिकार का प्रयोग करने की ज़िम्मेदारी भी रखता है।हालाँकि, भागीदारी की प्रकृति के संबंध में यह इस बात का अनुसरण नहीं करता है कि प्रत्यक्ष व्यक्तिगत भागीदारी आवश्यक है या उत्पन्न होने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं के लिए भी उपयुक्त है। लोकतंत्र में, विभिन्न स्थितियों में ऐसे उचित या व्यवहार्य साधन भागीदारी की आवश्यकता है। ऐसा नहीं है कि सभी प्रश्नों का निपटारा साधारण बहुमत से किया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक या वैज्ञानिक कोई भी स्वायत्त समूह हो, निर्णय और निर्णय लेने के नियंत्रण के लिए मानदंड या डिज़ाइन तैयार करने की समस्या से जूझना होगा।

इतना तो स्पष्ट है कि जहां लोकतंत्र को गंभीरता से लिया जाता है, वहां हर व्यक्ति को उम्र या बुद्धि की परवाह किए बिना उन निर्णयों में भाग लेने का अधिकार है जो किसी भी जनता को प्रभावित करते हैं, जिसका वह हिस्सा है। इतना तो स्पष्ट है कि जहां लोकतंत्र को गंभीरता से लिया जाता है, वहां उम्र या बुद्धि की परवाह किए बिना हर व्यक्ति को उन निर्णयों में भाग लेने का अधिकार है जो किसी भी जनता को प्रभावित करते हैं, जिसका वह हिस्सा है।बच्चे पारिवारिक निर्णयों से प्रभावित होते हैं, छात्र शैक्षिक निर्णयों से प्रभावित होते हैं और हम सभी राजनीतिक निर्णयों से प्रभावित होते हैं। यह याद रखें कि लोकतंत्र को प्रत्यक्ष व्यक्तिगत भागीदारी की आवश्यकता नहीं है, फिर भी यह सिद्धांत हमें याद दिलाता है कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में उदार तानाशाही लोकतांत्रिक आदर्श से कमतर है।

बोध प्रश्न 1

i) लिंकन ने लोकतंत्र की परिभाषा किस प्रकार दी?

.....

.....

.....

.....

ii) लोकतंत्र के साधारणतः स्वीकृत सिद्धांत क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

iii) लोकतंत्र में उचित भागीदारी क्या है?

.....

.....

.....

.....

4.7 शिक्षा में लोकतंत्र

जैसा कि हमने ऊपर चर्चा की है, लोकतंत्र की अवधारणा यह दर्शाती है कि यह कुछ मूलभूत मान्यताओं परआधारित है एवं यह इसे व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए सबसे अधिक सार्थक बनाती है। ये मूलभूत आस्थाएं या सिद्धांत, समानता एवं स्वतंत्रता न केवल सामाजिक-राजनीतिकव्यवस्था और संरचना का आधार हैंबल्कि हमारी शिक्षा और जीवन के मूल में भी निहित है। अर्थात्, शिक्षा के वैचारिक सिद्धांतों का वर्णन करते समय हम तर्क देते हैं कि शिक्षा का लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना होना चाहिए जिसमें लिंग, रंग, नस्ल या धर्म की परवाह किए बिना सभी के लिए समानता या अवसर हों। यह शायद समानता और स्वतंत्रता में असीम विश्वास ही है कि भारतीय संविधान के निर्माताओं ने प्रस्तावना में प्रावधान किया था कि जाति और पंथ, रंग, लिंग या क्षेत्र या धर्म के बावजूद सभी लोगों को क़ानून की नजर में समान माना जाएगा। संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों की जड़ में पुरुषों की असमानता है। शिक्षा या लोकतंत्र पर सभी परिकल्पनाओं एवं लेखों में समानता शब्द को स्वतंत्रता के साथ जोड़ा जाता है।राजनीति के साथ-साथ शिक्षा में भी रूसो का मुख्य ज़ोर समानता एवं स्वतंत्रता पर था। दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति भीसमानता और स्वतंत्रता पर अपने विचार रूसो के साथ साझा करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा के सभी सामाजिक सिद्धांत इन अवधारणाओं को शिक्षा की इमारत के साथ-साथ हमारे सामाजिक-राजनीतिक जीवन के लिए बुनियादी मानते हैं।

4.7.1 समानता एवं शिक्षा की अवधारणा

मूर (1982) इन दो अवधारणाओं - समानता और स्वतंत्रता - का सकारात्मक विश्लेषण करना चाहते हैं। समानता की अवधारणाओं के संबंध में, वह इस शब्द की सावधानीपूर्वक और गहन जांच करते हैं, समानता, निष्पक्षता या न्याय के समकक्ष शब्द के मूल अर्थ को पहचानते हैं, क्योंकि किसी अन्य तरीके से लोगों को समान नहीं माना जा सकता है। अतः, सभी मनुष्य समान हैं, कहने का अर्थ है कि सभी के साथ समान या उचित व्यवहार किया जाना चाहिए। सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना न तो वांछनीय है और न ही संभव, क्योंकि लोग वास्तव में भिन्न हैं; उनके पास अलग-अलग बुद्धि, क्षमता, आवश्यकताएं, रुचियाँ और प्रेरणाएँ हैं। इसलिए उनके साथ समान व्यवहार करने से लाभ से अधिक हानि होगी| इसके अतिरिक्त सभी मनुष्यों को समान अवसर प्रदान करना शारीरिक रूप से संभव नहीं है, क्योंकि उन्हें साधनों तक समान पहुंच नहीं मिल सकती है। अतः एकमात्र अर्थ जिसमें समतावादी है या राजनेता समानता के लिए तर्क देते हैं निष्पक्षता या न्याय की भावना है|

अब, यह स्पष्ट है कि समानता शब्द का प्रयोग इसके शाब्दिक अर्थ "समानता" में नहीं किया गया है। जब समतावादी 'समान' शब्द का उपयोग करता है, तो उसका अर्थ यह नहीं है कि सभी लोग वर्णनात्मक या अनुभवजन्य अर्थ में समान हैं। हम सभी मनुष्यों के साथ एक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते। बीमार लोगों के साथ वैसा व्यवहार करना उचित नहीं होगा जैसा हम स्वस्थ लोगों के साथ करते हैं। हम निर्दोषों एवं अपराधियों के साथ एक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते। शिक्षा के क्षेत्र में भी हम कार्यप्रणाली, सामग्री, शिक्षण की प्रक्रियाओं, मूल्यांकन की तकनीकों और अन्य तरीकों की विविधता के संबंध में,अलग-अलग बच्चों के साथ अलग-अलग व्यवहार करना उचित समझते हैं|वास्तव में जैसा कि संकेत दिया गया हैउपरोक्त छात्रों की अलग-अलग ज़रूरतें हैं और उनकी आवश्यकताओं और ज़रूरतों के अनुसार उनके साथ

अलग-अलग व्यवहार करना उचित है।विद्यार्थियों के साथ उनकी आवश्यकताओं के अनुसार व्यवहार करना समानता का सिद्धांत नहीं है; बल्कि यह सामाजिक न्याय के सिद्धांत के समान है। सभी बच्चों को उनकी रुचि, झुकाव या बुद्धि की परवाह किए बिना समान शिक्षा देना उचित नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि यह व्यक्ति के वास्तविक विकास में योगदान नहीं देगा। मूर (1982) लिखते हैं, 'निष्पक्ष व्यवहार, उचित व्यवहार' में लोगों की परिस्थितियों में अंतर को ध्यान में रखना शामिल है...किसी भी वास्तविक अर्थ में समान व्यवहार नैतिक और व्यावहारिक रूप से तभी स्वीकार्य है जब यह हमारी न्याय की भावना के अनुरूप हो।इसलिए शिक्षक या माता-पिता के रूप में हमें समान व्यवहार की नहीं, बल्कि उचित या उचित व्यवहार की आवश्यकता है। यह प्रतिभाशाली एवं कम सक्षम दोनों के लिए विशेष कक्षाओं या विशेष स्कूलों का प्रावधान करने के अनुरूप होगा|"

अत: समानता को न्याय एवं औचित्य के समानांतर माना जा सकता है। शिक्षा में न्याय के अंतर्गत, विद्यार्थियों के साथ उनकी विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप विभेदक व्यवहार शामिल हैं| मूर का तर्क है कि "शिक्षा के संगठन और प्रावधान का मूल्यांकन इस बात से नहीं किया जाता है कि यह किस हद तक समानता या समान अवसरों को बढ़ावा देता है, बल्कि यह किस हद तक बच्चों के साथ उचित व्यवहार करता है और उन्हें क्या प्रदान करता है"।

समानता की अवधारणा को 'स्वतंत्रता को' और 'स्वतंत्रतासे'के संदर्भ में न्याय एवं स्वतंत्रता के साथ जोड़ा गया है। 'स्वतंत्रता को' सेतात्पर्य उस स्वतंत्रता से है जो छात्रों को दी जानी चाहिए ताकि वे शिक्षा के 'अंत' को प्राप्त कर सकें। "स्वतंत्रता से" का तात्पर्य उन कारकों से मुक्ति है जो शिक्षा की प्रक्रिया को बाधित करते हैं।

4.7.2 शिक्षा में स्वतंत्रता

स्वतंत्रता एक अवधारणा है, जो हमारे राजनीतिक, सामाजिक या यहां तक कि व्यक्तिगत जीवन में, मानव जाति का सबसे अधिक चाहा जाने वाला लक्ष्य है.. किंतु यह अवधारणा समानता की अवधारणा से भी अधिक जटिल है। स्वतंत्रता के पीछे मूल विचार यह नहीं है कि इसे शारीरिक बल या कानून पारित करके विवश या बाधित किया जाए, जो फिर से बल के अप्रत्यक्ष उपयोग के समान है। शिक्षा उन क्षमताओं को प्राप्त करने का एक साधन है जिनके बिना स्वतंत्रता सार्थक नहीं है। वास्तव में, शिक्षा या ज्ञान किसी की स्वतंत्रता को बढ़ाता या सीमित नहीं करता; यह केवल इसका उपयोग करने की क्षमता को बढ़ाता है।शिक्षा पर निर्भर करने के बजाय स्वतंत्रता कानूनों, विनियमों या सामाजिक निर्णयों पर निर्भर है।यह एक सामाजिक या राजनीतिक अच्छाई है|

कार्य केवल तभी तक अच्छे या बुरे कहलाए जा सकते हैंजब तक वे स्वतंत्र, स्वायत्त रूप से, अपनी स्वतंत्र इच्छा से किए जाते हैं। शिक्षा के सन्दर्भ में स्वतंत्रता पर बहुत अधिक अधिमूल्य लगा दिया गया है|शिक्षा के संबंध में अधिकांश विचारकों अर्थात, रूसो,फ्रोबेल, हर्बर्ट एस्पेंसर, जॉन डेवी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, जे. कृष्णमूर्ति, और ए एस नील को बच्चे के सीखने में स्वतंत्रता के महत्व का एहसास हुआ। यह स्वतंत्रता ही है, जो बच्चे को एक स्वतंत्र एवं स्व-विनियमन करने वाले व्यक्ति के रूप में विकसित होने में सक्षम बनाती है|

4.7.2.1 स्वतंत्रता के प्रकार

शिक्षकों और अभिभावकों सहित अधिकांश लोगों का मानना है कि बहुत अधिक स्वतंत्रता बिल्कुल वांछनीय नहीं है| बच्चों एवं यहाँ तक कि वयस्कों द्वारा भी स्वतंत्रता का दुरुपयोग

किया जा सकता है। वस्तुतः स्वतंत्रता एक अस्पष्ट अवधारणा है, जिसे स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता विभिन्न प्रकार की हो सकती है, जैसे; उन प्रतिबंधों से मुक्ति जो हमारे व्यक्तित्व को उसकी पूर्ण क्षमता तक विकसित होने से रोकती है और स्वतंत्रता यह दर्शाती है कि व्यक्तिगत/या सामाजिक हितों के लिए सबसे अच्छा क्या है। कुछ स्वतंत्रताओं को प्राथमिकता के पैमाने पर उच्च दर्जा दिया गया है; अन्य विकसित होते हैं और इसलिए पूरे समाज द्वारा हतोत्साहित होते हैं।

कुछ स्वतंत्रताएं जिन्हें महत्व दिया जाता है और इसलिए प्राथमिकता दी जाती है वे हैं: जहां चाहें वहां रहने की स्वतंत्रता, मतदान करने की स्वतंत्रता, अपने मित्रों को चुनने की स्वतंत्रता, अपने विचारव्यक्त करने की स्वतंत्रता, किसी विशेष आस्था या धर्म को स्वीकार करना इत्यादि। हममें से अधिकांश लोग जिस स्वतंत्रता को हतोत्साहित करना चाहेंगे उसकी सूची भी बहुत लंबी है।

उदाहरण के लिए, हम चोरी करने, धोखाधड़ी करने की स्वतंत्रता को हतोत्साहित करना चाहेंगे। हम समझते हैं कि शिक्षा, सीखने वाले और शिक्ष कों दोनों के लिए कुछ स्वतंत्रताएँ निर्धारित करती है। उदाहरण के लिए, शिक्षक को अपना कार्य करने, उसे व्यवस्थित करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। उदाहरण के लिए, शिक्षक को अपने कार्य को पूरा करने, अपने काम को व्यवस्थित करने, विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार उन्हें पढ़ाने के तरीकों को अपनाने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए।इसी प्रकार, विद्यार्थियों को अभ्यास करने के लिए कुछ स्वतंत्रताएँ आवश्यक हैं। विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए और सीखने के लाभ के लिए स्कूल में उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। हालाँकि, कुछ ऐसी स्वतंत्रताएँ हैं जिन्हें शिक्षक बच्चों में हतोत्साहित करना चाहेंगे: उच्छृंखल होने की स्वतंत्रता, कक्षा में असावधान रहने की स्वतंत्रता, आदि, क्योंकि, यदि इन स्वतंत्रताओं की अनुमति दी जाती है, तो शिक्षक उन्हें शिक्षित नहीं कर पाएगा और शिक्षक के रूप में उसकी प्रभावशीलता कम हो जाएगी। साथ ही यह छात्रों के हित में भी नहीं होगा।फिर कुछ स्वतंत्रताएँ हैं, जिनकी कभी-कभी शिक्षक अनुमति देता है और कभी नहीं देता। स्वतंत्रता घूमने-फिरने, दूसरे बच्चों के साथ काम करने, अपना काम या काम करने का अपना तरीका चुनने की है।इसलिए, शिक्षकों की ओर से, कुछ स्वतंत्रता अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए, अन्य को अनिवार्य रूप से हतोत्साहित किया जाना चाहिए,और फिर भी अन्य लोग संदर्भ पर इतने निर्भर हैं और इसलिए उन्हें अनुमति देना या अस्वीकार करना संदर्भ पर निर्भर करता है।अतः, रोचक प्रश्न यह है कि वांछनीय एवं अवांछनीय स्वतंत्रता के बीच अंतर की रेखा कैसे खींची जाए।

ज्ञान और अनुशासन के प्रमुख महत्व पर अपना रुख अपनाने वाले परंपरावादी के विपरीत, बच्चों से शांत, चौकस और शिक्षक द्वारा निर्देशित होने की उम्मीद की जाती है। प्रगतिवादी बच्चे के व्यक्तिगत विकास पर ध्यान देता है। वह सहज, आत्म-प्रेरित अनुशासन, व्यक्तिगत खोज की आवश्यकता पर ज़ोर देता है तथा इस प्रकार कक्षा के भीतर स्वतंत्रता के प्रति काफी सहिष्णु है।

अनुशासनप्रिय विद्यार्थी की स्वतंत्रता को न्यूनतम कर देता है; आदर्शवादी प्रगतिवादी या अस्तित्ववादी बच्चों की सहज गतिविधि और स्वतंत्रता पर वयस्कों द्वारा किसी भी तरह के थोपे जाने को सिद्धांत के समान मानते हैं। ये दोनों दृष्टिकोण चरम सीमाएँ हैं।शिक्षा के संदर्भ में

इसलिए, एक साधन के रूप में कार्य करता है न कि 'अंत' के रूप में।शिक्षाअपने आप में एक सार्थक गतिविधि या सार्थकता का आरंभ है (पीटर्स, 1966))।यदि स्वतंत्रता देने से विद्यार्थियों के प्रदर्शन में वृद्धि होती है, तो इसे न देना मूर्खता है; यदि दी गई स्वतंत्रता से शोर, व्यवधान,अनुशासनहीनता आदि होती है तो इसेहतोत्साहित करना बिल्कुल उचित है। और जो बात विद्यार्थियों की स्वतंत्रता के बारे में सच है, वही शिक्षकों की स्वतंत्रता के बारे में भी सच है। एक शिक्षक को पढ़ाने के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए लेकिनपाठ्यक्रम के तरीकों या सामग्री के संबंध में उसकी स्वतंत्रता उस हद तक उचित है, जहां तक ऐसी स्वतंत्रताएं शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करती हैं।

बोध प्रश्न 2

i) शिक्षा में समानता से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

ii) शिक्षा में स्वतंत्रता का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

iii) परंपरावादी और प्रगतिवादी के बीच क्या अंतर है?

.....

.....

.....

4.8 सारांश

मनुष्य के रूप में हम सभी अपने साथी मनुष्यों केसाथ खुशी से, शांति से और सद्भाव से रहना चाहते हैं। इसलिए, सभी मानवीय गतिविधियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस 'अंत' की प्राप्ति का लक्ष्य रखती हैं। सरकारें समाज को सुव्यवस्थित करने, नागरिकों के सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने और राज्य को बाहरी आक्रमण और आंतरिक व्यक्तिगत/सामाजिक संघर्षों से बचाने के लिए बनाई जाती हैं। एक सभ्य समाज के लिए, यह सरकार का लोकतांत्रिक स्वरूप ही है जो व्यक्तिगत और सामाजिक हितों का उचित ख्याल रख सकता है। इस इकाई में, हमने लोकतंत्र की अवधारणा और उन स्तंभों पर चर्चा की है जिन पर यह आधारित है और क्यों इसे सरकार का सबसे अच्छा रूप माना जाता है। लोकतंत्र, वास्तव में, केवल सरकार का एक रूप नहीं बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। लोकतंत्र सामाजिक जीवन की एक प्रक्रिया है; यह मानव कल्याण के कुछ सिद्धांतों पर आधारित है। ये सिद्धांत हैं समानता एवं साझेदारी या निष्पक्षता, न्याय एव, प्रतिबंधों से मुक्ति - ऐसे प्रतिबंध जो किसी के समृद्धि एवं विकास को सीमित करते हैं।जीवन जीने के लोकतांत्रिक तरीके या सरकार के स्वरूप में हर कोई वह करने के लिए स्वतंत्र है जो उसके सर्वोत्तम हित में है, बशर्ते ऐसी

कार्रवाई किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह की स्वतंत्रता के अधिकार में हस्तक्षेप न करे।पुरुषों की समानता के संबंध में, इसका तात्पर्य कानून के समक्ष समानता से है। लिंग, रंग या पंथ जैसे आधार पर भेदभाव अनुचित है। हमने चर्चा की कि लोकतांत्रिक दृष्टिकोण में मूल रूप से (i) व्यक्तित्व के प्रति सम्मान और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने वाली स्थितियाँ, (ii) मानव बुद्धि में विश्वास और (iii) निर्णय लेने में उचित भागीदारी के लिए अधिकार एवं और उत्तरदायित्व शामिल है।

लोकतंत्र शब्द के अर्थ पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि शांति और सद्भाव में रहने के लिए, यह सरकार का एकमात्र रूप और जीनेका एक तरीका है जो व्यक्ति और उस समाज के सर्वोत्तम हितों की सेवा कर सकता है जिसका वह सदस्य है। भाग। यह किसी के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सुनिश्चित करता है एवं शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इसके अतिरिक्त, इकाई लोकतंत्र के सिद्धांतों के निहितार्थों पर भी चर्चा करती है अर्थात, शैक्षिक प्रक्रिया में समानता तथा स्वतंत्रता। इस संदर्भ में, हमने सबसे पहले समानता और स्वतंत्रता शब्दों के अर्थ का शब्दार्थ विश्लेषण किया और शिक्षा में उनके निहितार्थ पर चर्चा की।समानता की अवधारणा को निष्पक्षता या न्याय और स्वतंत्रता से एवं स्वतंत्रता के संदर्भ में स्वतंत्रताके साथ जोड़ा गया है। 'स्वतंत्रता' से तात्पर्य उन स्वतंत्रताओं से है, जो छात्रों को दी जानी चाहिए ताकि वे शिक्षा के 'अंत' को प्राप्त कर सकें। "से स्वतंत्रता" का तात्पर्य उन कारकों से मुक्ति है जो शिक्षा की प्रक्रिया को बाधित करते हैं।

4.9 बोध प्रश्न केउत्तर

बोध प्रश्न 1

i) अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को जनता के लिए, जनता द्वारा और जनता के रूप में परिभाषित किया।

ii) लोकतंत्र के आम तौर पर स्वीकृत सिद्धांत हैं:**a)** व्यक्तित्व और उस स्थिति के प्रति सम्मान जो मानव व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा देती है।**b)**मानव बुद्धि में विश्वास स्वतंत्र, स्वायत्त जांच की प्रक्रिया के माध्यम से गठित और सूचित किया गया।**c)**साझा चिंता की समस्याओं की जांच और समाधान में उचित भागीदारी के अधिकार एवं उत्तरदायित्व|

iii) इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी जनता के प्रत्येक सदस्य को उस जनता की समस्याओं की जांच और समाधान में भाग लेने का अधिकार है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को जनता, उसके हितों और समस्याओं में रुचि एवं चिंता है।

बोध प्रश्न 2

i) शिक्षा के क्षेत्र में हम कार्यप्रणाली, सामग्री, शिक्षण की प्रक्रियाओं, मूल्यांकन की तकनीकों और कई अन्य तरीकों से अलग-अलग बच्चों के साथ अलग-अलग व्यवहार करते हैं।

ii) स्वतंत्रता एक अवधारणा है एवं इसका मूल विचार विवश या बाधित होना नहीं है। शिक्षा या ज्ञान किसी की स्वतंत्रता को बढ़ाता या सीमित नहीं करता; यह केवल इसका उपयोग करने की क्षमता को बढ़ाता है।

iii) परंपरावादी ज्ञान और अनुशासन के प्रमुख महत्व पर अपना पक्ष रखता है जबकि प्रगतिवादी बच्चे के व्यक्तिगत विकास पर ध्यान देता है।वहसहज, स्वयं लगाए गए अनुशासन और व्यक्तिगत खोज की आवश्यकता पर जोर देता/देती है तथा इस प्रकार कक्षा के भीतर स्वतंत्रता के प्रति काफी सहिष्णु है।

4.10 सन्दर्भ

डागरबी.एस. और ढुल, इंदिरा (1 994)। नैतिक शिक्षा में परिप्रेक्ष्य, नया

दिल्ली: उप्पल पब्लिशिंग हाउस।

डागर बी.एस. (1992)। शिक्षु तत्तु मानव मूल्य (हिन्दी), चंडीगढ़: हरियाणा साहित्य अकादमी।

जैक्स, डेलर्स (1996)। भीतर के खजाने को सीखना - इंटरनेशनल की रिपोर्ट

शिक्षा आयोग, पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन

करण सिंह (19%)। जैक्स, डेलर्स (1996) में "वैश्विक समाज के लिए शिक्षा",

भीतर के खजाने को सीखना - अंतर्राष्ट्रीय आयोग की रिपोर्ट

शिक्षा, पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।

अयेर, ए.जे. (1946) "भाषा सत्य और तर्क" डाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी.

(1982), मोरल एजुकेशन, लंदन: हार्पर एंड रो।

बैर, के. (1975). "शिक्षा के उद्देश्य के रूप में नैतिक स्वायत्तता" डाउनी, जे.बी. और

केली, ए.बी. (1982), मोरल एजुकेशन, लंदन: हार्पर एंड रो।

डागर बी.एस. और ढुल, इंदिरा. (1995)। नैतिक शिक्षा में परिप्रेक्ष्य, नया

दिल्ली: उप्पल पब्लिशिंग हाउस।

डाउनी, जे.बी. और केली, ए.बी. (1982)। नैतिक शिक्षा, लंदन: हार्पर और

हरे, आर.एम. (1974). स्वतंत्रता और कारण, ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हर्ष, आर, डायना पाओलिटो, और जोसेफ रिमर (1979)। नैतिक विकास को बढ़ावा देना:

पियागेट से कोहलबर्ग, न्यूयॉर्क तक: लॉन्गमैन

हर्स्ट, पी.एच. (1974). सेक्युलर सोसायटी में नैतिक शिक्षा, लंदन: होडर और

हर्स्ट, पी.एच. और पीटर्स, आर.एस. (1 97 1) द लॉजिक ऑफ एजुकेशन, लंदन: रूटलेज

और केगन पॉल.

कोहलबर्ग, एल. (1964)। स्कूलों में नैतिक शिक्षा, स्कूल शिक्षा जर्नल।

कोहलबर्ग, एल. (1963)। नैतिक विकास और पहचान, शिकागो: विश्वविद्यालय

शिकागो प्रेस के.

पीटर्स, आर.एस. (1966) नैतिकता और शिक्षा, लंदन: मेन एंड अनविन।

पीटर्स, आर.एस. (1973) कारण और करुणा, लंदन: रूटलेज और केगन पॉल।